शब्द रंजन

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 1 | अंक 18 | उदयपुर शनिवार 01 अक्टूबर 2016 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

नवरात्रा में शक्ति और भक्ति का दरसाव

हमारा देश जितना धार्मिक-आध्यात्मिक है संभवत: विश्व में उतना कोई देश नहीं। छोटे-मोटे हर धर्म, कर्म, पूजा, प्रतिष्ठान, संस्कार पर हमारे यहां लोकदेवी-देवताओं का आह्वान, उनकी मनौती, जागरण, गाथा-गायकी, भजनभाव, अनुष्ठानादि का विधान है। अलग-अलग संस्कारों, अनुष्ठानों, व्रतों, कथाओं के अलग-अलग देवता, उनके विशिष्ट भोपे, पूजापा, मान-मनावण। मनुष्य की बीमारियों तक के अलग-अलग देवरे। मनुष्य के साथी पशुओं की व्याधियों के भी जुदा-जुदा देव, उपचार, उत्सर्ग, प्रसंग। ये सारे उदाहरण इस बात के साक्षी हैं कि मनुष्य अपने से परे किसी ऐसी विशिष्ट शक्ति का पुजारी है जो संसार की रचना-प्रक्रिया में सर्वोपरि महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

नवरात्रा का हमारे यहां शास्त्रोक्त विधान तो है ही पर लोकविधान भी बड़ा जोर-जबर्दस्त है। कई प्रकार की सिद्धियां, टोटके, तंत्रमंत्र इन दिनों किये जाते हैं। शक्तियों का अवतरण होता है। रात-रातभर जागरण होता है। अपने सेवकों में उनका भाव आकर प्रत्यक्षीकरण होता है। उनकी छाया बनी की बनी रहती है। देवताओं की विशिष्ट सेवा-पूजा, मान-मनावण, धूप-ध्यान, भोग-पाती, अरजू-आरजू, जातरियों का आवागमन लोकदेवी-देवताओं के देवरों में बना का बना रहता है।

नौ लाख देवियों का आश्रय स्थल :

शक्ति प्रतीक रूप में हमारे यहां लोकदेवियों की पूजा का विशेष जोर रहा है। किसी महिला ने कोई विशिष्ट असाधारण चमत्कारपूर्ण कार्य दिखाया कि उसे लोकजीवन ने शक्ति-देवी का अवतार मानकर पूजना प्रारंभ कर दिया। उसके नाम के देवल, मंदिर, देवरे स्थापित कर दिये गये। ऐसी देवियों की संख्या कई हैं। उनके अलग-अलग शक्ति-शौर्य के किस्से एवं घटना-प्रसंग सुनने को मिलते हैं।

अकेला नौ लाख देवियों का स्थान 'बड़ल्या हींदवा' उदयपुर के निकट खमनौर के पास स्थित है। बारह बीघे में फैले इस वट वृक्ष पर नौ लाख देवियां झूला झूलती, क्रीड़ा-किल्लौल करती हैं। मैंने स्वयं जाकर इस स्थान को, बड़ को और वहां के आसपास के पहाड़ी इलाके को देखा है। बड़ल्या-हींदवा संबंधी भारत-गाथा भी है जिसमें यहां के आसपास के स्थानों का बड़ा उन्नत वर्णन मिलता है। यह वर्णन इतिहास-सम्मत भी है। इसमें देवियों की केलि-क्रीड़ा का बड़ा सुंदर चित्रण है।

राजस्थान में पांचवीं शताब्दी के बाद कई शिलालेख मिलते हैं जिनमें शक्ति-देवियों के मंदिर-निर्माण का पता चलता है। डूंगला की एलवा, निकुंभ की आवरी, पूठोली की लालांफूलां, वल्लभनगर की ऊंठाला, रींछेड़ की आमज, चित्तौड़ की कालका, एकलिंगजी की नारसिंघी, उदयपुर की अम्बा, खमनौर की देवलउनवा, कांकरोली की धुंधलाज, राजनगर की बोराज, देवगढ़ की सानु, लाखोड़ा की भरक, करौली की केला, खुड़द की इन्द्रबाई, बीकानेर की नागणेचिया, वागड़ के भैंकरेड़ की विजवा, कटारा की हेरण, तालवाड़ा की तकताई, मेलड़ी, खोड़ियार, देलवाड़ा की राटासण, राईड़ा, केलवा की गवालां, घोसुंडा की जांतला, आर्सीद की धनोप, खारकन्दा की गोदाला, बसी की टुकड़ा, जावद की कुकड़ेसर, पारसोली की घाटा, बेगू की जोगणिया, देवाली की बीज, भीलवाड़ा की रोड़ज, झूंझनू की मंछा, कुरज की गोगाथला, कांकरोली की भरत आदि देवियों के अतिरिक्त दीयाड़ी, गणगौर, चौथ, दशा, संतोषी, फूली, पथवारी, डाली, हूला, अनफूल,

सगरा, रोगा, गोरज्या, हिंगलाज, रूपण, सूर, सीता, बाण, पीपलाज, खलखल्या, गुवाड़, नागणी, गुण्या, मच्छी, मुरगा, बोकड़्या, मोगी, स्यावड़, फलका, गलफेड़ी, पसानी, मासी मां, शीतला, छठी, केवल, छींक, लूरकी, तुलसी, लटकाली, कमस्या, वगोतरी जैसी कई देवियां हैं जो लोकजीवन में अपने नाना चमत्कारों के लिए प्रसिद्ध हैं।

देवियों का वैशिष्ट्य :

इन देवियों में ऊंठाला चेचक की, एलवा तुतलों की, लूरकी खांसी की, शीतला, मसानी विशेष प्रकार के चेचक की, गलफेड़ी गलफेड़ों की, बिजवा लूले-लंगड़ों की, आवरी लकवे रोगियों की, बाकियारी गले की गांठों की, जातला लूलेपांगों की, गणगौर सुहाग की, दीयाड़ी, केला संतान की, दशा ऋद्धि-सिद्धि की देवी मानी जाती है। संतान देने वाली देवियों के पालना चढ़ाया जाता है। लूरकी के ठंडा भोजन चावल-दही व बीमार बच्चे का फटा पुराना कपड़ा, गणगौर, दशा के मेंहदी-लच्छा तथा हल्दी मिश्रित आटे के विविध आभूषण चढ़ाये जाते हैं। स्यावड़ कृषि की रक्षा करती है। इन देवियों के नारियल भी चढ़ाया जाता है। दीयाड़ी के चावल-लपसी, चौथ के चूरमा-लड्डू, शीतला के ओल्या-ढोकला चढ़ाने की परंपरा है।

लोकदेवियों के साथ-साथ लोकदेवताओं के भी हमें कई नाम मिलते हैं। इनके भी अलग-अलग कार्य तथा सिद्धियां हैं। इन देवों में रामदेवजी (अंधापन व कोढ़), मोती महाराज (मोतीझरा), कालाजी, गोराजी, छप्पनजी, पोपस्या, ताखाजी, देवजी (पशु रक्षा), गोगाजी (सर्पदंश), अचपड़ा (छोटी चेचक), ताखा, रेबारी, पाबू, देवनारायण, धर्मराज, खेतरपाल, डाडा, रांगड़्या, आलेड़ा, जोइड़ा, भमरास्या, तेजा, ईंटा, मामादेव, नीमा, नार, पोल्या, शनि, भोमिया, घास, राड़ा, दीयाड़ा, हरदेव, खेड़ादेव, जार्लिंग, बालाजी, गूना, मेनू नामक देवों की बड़ी धाम चलती है।

भेरू के कई रूप हैं। 52 भेरू, 8 पीर तथा 64 जोगण्यां तो हैं ही। काला गोरा के अतिरिक्त भेरू के अन्य रूपों में खेतरपाल, धरमराज, ताखाराज, कराड्यो भेरू, आगल्यो भेरू, कचेमरयो भेरू, मांडव्यो, मसाण्यो, रगत्यो भेरू, घाटा रो भेरू, वचलावासा रो भेरू, बनाक्या भेरू, गंगा भेरू, भदेर्‌या भेरू, खेजड़ी रा भेरू ,दूत्या रींगण्या भेरू, गोबर्‌या भेरू जैसे नाम बहुत प्रचलन में हैं। इनमें बालाजी के तेल चुपड़ा मोटा रोट-गुड़, तेजाजी, देवनारायण के कच्चा दूध, सवाईभोज के शराब, गोरधनजी के लपसी-पूड़ी, काला के केसर अफीम तथा कइयों को बलि दी जाती है।

मनुष्यों को व्याधियों से मुक्त करने वाले इन देव-देवियों में ऐसे भी देव हैं जो मानव-साथी पशुओं की भी हर बीमारी मेटते हैं। उदयपुर के पास मंगलवाड़ के चौराहे के राड़ाजी का खेड़ा गांव के देवरे में तो बांझ पशु तक का बांझपन दूर किया जाता है। यहां दूध-दही का जावणियां चढ़ाई जाती हैं। इससे लगता है कि जहां लोकजीवन में बांझ औरतों को अच्छी भावना से नहीं देखा गया है वहां बांझ पशुओं को भी तिरस्कार ही मिला है।

जिस लड़की को कोई न विवाहे, उसका विवाह खेतरपाल से कर दिया जाता है ताकि वह अपने अगले जन्म में कुंवारी न रहे। डूंगरपुर के पास मांडव गांव के मांडव्ये हनुमान के वहां ल्होड़ी दीवाली को मेला भरता है। इस दिन हनुमान का भोपा अपनी एक अंगुली से सवा पांच मन की सांकल उठाता है।

पूरवजों की प्रतिष्ठा :

इन देवी-देवताओं के अतिरिक्त एक देव और होते हैं जो 'पूरवज' कहलाते हैं। ये घर के ही किसी प्राणी की मृत्यु होने पर प्रकट होते हैं। वागड़ की ओर पुरूष-पूरवज को 'पूरवोज' तथा स्त्री-पूरवज को 'नांगरेसि' कहते हैं।

-शेष पृष्ठ सात पर

तब सोच नहीं था.... तब भी

'जहां सोच है वहां शौचालय है' - प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदीजी के इस नारे का जमीनी प्रभाव दिखता जा रहा है। हिन्दुस्तान में कोई भी असरदार चीज देर से ही असर करती है। तेज रफ्तार यहां काम नहीं करती। अभी भी लोग कछुए को ही आदर्श मानकर चल रहे हैं। कम्प्युटर के युग में भी खरगोश स्थापित नहीं हो पाया है और चालाक कौआ लोमड़ी से प्रभावित नहीं होकर गाना गाने के लिए मुंह नहीं खोलता लेकिन अतिथि देवो भव: का भारतीय आदर्श रखे हुए लोमड़ी को गाना जरूर सुनाता है पर चोंच से धीरे से ट्रांजिस्टर चालू कर। मूर्ख लोमड़ी बनती है। गाना सुनने पर भी कौए की चोंच से रोटी का टुकड़ा नीचे नहीं गिरता है। इसे राजनीति नहीं, नीति धर्म तो कहना ही पड़ेगा।

सो, बात तब की है जब समूह-सोच का नितान्त अभाव था जो अब भी छोटी जगह थोक में देखा जा रहा है इसलिए शौचालय की कल्पना स्वप्न में भी नहीं थी। हम लोग उदयपुर में रहते थे। मेरी बड़ी बहिन रेखा का सगपण नाई गांव में करना था। वहां और तो सबकुछ ठीक था पर शौचालय नहीं था सो पिता श्री सुभाषजी नलवाया ने ब्याईजी के कान में यह बात डाल दी कि शहर में रह रही मेरी लड़की सभी तरह से आपके परिवार में एडजस्ट हो जायेगी पर शौचालय के लिए घर के बाहर जाना उसके लिए संभव नहीं होगा। ब्याईजी अच्छे खाते-पीते, घर-गृहस्थी वाले प्रतिष्ठित सज्जन थे। फिर भी सगपण के दौरान मेरे पिताजी ने चीड़ी में 11 हजार रूपये शौचालय के लिए अतिरिक्त रख दिये। पिताजी से भी अधिक इसके लिए मातुश्री रूक्मणीदेवी का आग्रह था। रेखा की 1992 में शादी कर दी गई पर शौचालय नहीं बन पाया तब रेखा (वया) ने आगे होकर शौचालय बनवाया। पिताजी बताते हैं कि तब सवर्णों में सर्वाधिक जैन थे जिनके सौ घर थे पर मुश्किल से तीन-चार घरों में ही शौचालय थे।

शौचालय के प्रसंग में बात चली तो मेरे श्वसुर डॉ. महेन्द्र भानावतजी ने अपने घर में घटी घटना का उल्लेख करते हुए बताया- हमारे घर में मेरी मां, बड़े भाई डॉ. नरेन्द्र भानावतजी, मैं और छोटी बहिन सहित कुल चार प्राणी थे। कमाने वाला कोई नहीं था पर मां ने अनपढ़ होते हुए भी हमारी पढ़ाई कराई। वह बड़ी हौसलेबाज, दिलेर तथा समझबुद्धि की थी। भाई साहब का विवाह बड़ी खुशी लेकर आया। वर्षों में पहली बार मां ने कोई बहू देखी, वह भी पढ़ी-लिखी बिना घूंघट में जबकि मां घूंघटधारी थी लेकिन उसने अपनी स्थिति के कारण और तो कोई सम्पन्नता नहीं दिखाई पर एक शौचालय अवश्य बनवा दिया। यह घटना भाई साहब के विवाह पूर्व फरवरी 1956 की है। तब कानोड़ बड़ा गांव था जिसमें 400 घर तो जैनियों के ही थे पर मुश्किल से तीन-चार घरों में शौचालय थे। मेरी पूरी गवाड़ी में तो एक भी शौचालय नहीं था।

वर्षों बीत गये। इस छोटी सी किन्तु सर्वाधिक आवश्यक, महत्वपूर्ण और अनिवार्य चीज को आजादी के लम्बे समय गुजर जाने के बाद भी किसी का सोच नहीं गया। स्वच्छ भारत के लिए घर-घर शौचाालय का मंत्र देनेवाले प्रधानमंत्री मोदीजी को भारतीय लोकतंत्र का सलाम।

-रंजना भानावत

स्मृतियों के शिखर (17) : डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार, आचार और उच्चार-धनी आचार्य नानेश

अपने आत्मकल्याण के साथ-साथ जो व्यक्ति अपनी समग्र चेतनानुभूति से ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र द्वारा लोक का पथ बुहारता हुआ जन-जन को जीवनालोक प्रदान करता है वही सच्चे अर्थों में लोकसंत कहलाये जाने का अधिकारी होता है।

रामचरितमानसकार ने ऐसे संतों के चरित्र की तुलना कपास से की है। कपास जिस प्रकार उज्ज्वल और उपयोगी होता है वैसे ही संत का जीवन शुभ्र, पावन और लोकधर्मी ताने-बाने से बुना होता है। कपास का डोडा नीरस होता है। साधु-जीवन भी विषय विकारों से रहित होता है। विषयासक्ति में जो रस होता है साधु उससे कोसों दूर रहकर नीरस जीवन जीने में ही आत्मिक शांति एवं जीवनानंद का अनुभव करता है।

'साधु चरित सुभ चरित कपासू /
निरस बिसद गुनमय फल जासू।'

कपास के फूल की एक और विशेषता है। मानसकार ने कहा है - 'जो सहि दुख पर छिद्र दुरावा / वंदनीय जेहिं जग जस पावा।' कपास का धागा सुई के किये हुए छेद को अपना तन देकर ढक देता है वैसे ही संत स्वयं कष्ट पाकर दूसरों के दोष ढकता है। कपास लोढ़ा जाता है। काता जाता है। बुना जाता है। तार-तार होकर भी, कष्ट-पर-कष्ट सहकर भी वस्त्र का रूप लेकर वह अन्य लोगों का तन ढकता है। संत भी ऐसे ही अपने को तपा-खपा कर लोगों की कल्याण कामना करता है। अपना सर्वस्व समर्पण कर सबका तारनहार बनता है।

लोकजीवन में भी दृष्टांत आता है जिसमें फूलों में सबसे बड़ा फूल कपास का कहा गया है जो पूरी दुनियां को अपने रेशे के बने कपड़े से ढककर मनुष्य की लाज बचाता है। यही संत की प्रकृति है जो अनेक कष्ट पाकर भी अपने रेशे-रेशे, रोम-रोम में उत्फुल्ल रह परमार्थजीवी बना रहता है और कपास की तरह अपने को निर्मल, शुद्ध, स्वच्छ, धवल, उज्ज्वल किये रहता है। ऐसा संत लोकसंत की श्रेणी में आता है। कबीर, मीरां, दादू, रैदास ऐसे ही संत थे। श्री अखिल भारतीय साधुमार्गी जैन संघ के आचार्य नानेश भी ऐसे ही संतों की श्रेष्ठ परंपरा में परिगणित होते हैं।

वैराग्य और विराग के संस्कार :

बचपन से ही उनमें वैराग्य और विराग के बीज संस्कारित थे। थोपा हुआ वैराग्य, पटाया हुआ वैराग्य, लोभ और लाभ-लालसाजनित वैराग्य, उम्मीदों और ऐषणाओं तथा महत्वाकांक्षाओं का वैराग्य यह फल नहीं देता जो स्वत: स्फूर्त आत्म चैतन्य की पयस्विनी से निसृत वैराग्य देता है। इसलिए वैरागी काल से लेकर आचार्य के अंतिम पड़ाव तक नानेश निरभिमानी, समदर्शी, समतावादी, अपने पराये से निर्लिप्त बने रहे। युवाचार्य और आचार्य होने की जय-जयकारें उन्हें यत्किंचित भी विचलित नहीं कर पाई।

वे कभी भीड़ प्रिय नहीं रहे और न कभी उन्होंने अपने चरणों की ओर श्रावक समुदाय की दृष्टि केन्द्रित करने की कोशिश की। उनकी धर्मसभा में श्रोताओं का रेला का रेला उमड़े या वे किसी विशाल सभा की शोभा बनें, ऐसी चाहना से वे सदा दूर रहे। अपने धर्मसंघ को फैलाने, विदेश तक पहुंचाने, कुछ नया करने, परिवर्तन लाने तथा आधुनिकता देने जैसी औपचारिकताओं के विश्वासी भी वे कभी नहीं बने। एक शास्त्रीय आत्मानुशासित और पुष्ट परंपरा का पोषण करने में ही अपने साधु-साध्वी एवं श्रावक-श्राविकाओं को लगे रहने का उन्होंने उपदेश दिया।

उन्होंने कभी ध्वनि विस्तारक यंत्र का प्रयोग नहीं किया। न बिजली की रोशनी ही स्वीकार की। भक्त श्रावक कहते, अनुनय विनय करते कि माइक्रोफोन के अभाव में बहुत सारे लोग वाणी-व्याख्यान श्रवण नहीं कर पाते। बुद्धिजीवी, प्रबुद्ध श्रोता और वैज्ञानिक तर्क देते कि माइक के प्रयोग में किसी तरह की हिंसा नहीं है, किंतु आचार्य नानेश की समझाइश के आगे सब चुप रह जाते। वे शास्त्र-सम्मत विचार से ऐसा समाधान देते कि सबकी शंका निर्मूल हो जाती। फिर वे यह भी जानते थे कि वे साधु हैं और साधुत्व की क्या मर्यादाएं हैं। बहुत सारी लौकिकताओं से उसे बचना होता है। एक सुविधा पाली कि अन्य सुविधाओं के द्वार खुल जायेंगे जो साधुत्व के लिए, साधु के आत्मोद्धार के लिए बाधक ही सिद्ध होंगे।

प्रभावी व्याख्यान वाचक :

आचार्य नानेश के व्याख्यान लोकशिक्षण से ओत-प्रोत, अन्तस की गहराइयों को छूने वाले, सरल, सुगम और बोधपरक होते थे। प्रभु में अटूट विश्वास लिए वे हर व्याख्यान किसी प्रार्थना से प्रारंभ करते थे। यह प्रार्थना किसी तीर्थंकर भगवान से संबंधित होती थी। प्रार्थना के मर्म पर टिप्पणी करते हुए वे मनुष्य को तदनुसार आचरण करने की प्रेरणा देते थे। यथा-

पद्म प्रभु पावन नाम तिहारो
पतित उद्धारन हारो।। पद्म प्रभु.....

''यह पद्म प्रभु की प्रार्थना है। प्रभु का नाम पावन और पवित्र है। पतितों का उद्धार करने वाला है। पतित कौन हैं? कवि ने धीवर, भील और कसाई की ओर संकेत किया है। गो की, ब्राह्मण की, स्त्री की हत्या करने वाला पतित माना गया है। इन हत्याओं को करने वाले यदि आपके नाम की स्तुति को समझ लेते तो वे भी अपने जीवन का उद्धार कर पाते।''

ऐसी किसी प्रार्थना से प्रारंभ हुआ व्याख्यान जीवन के विविध संदर्भों, विभिन्न घटनाचक्रों, बात-आख्यानों, घर-परिवार से लेकर सामाजिक, राष्ट्रीय समस्याओं को छूता, समेटता हुआ किसी शिक्षाप्रद धारावाहिक कथा-क्रम की संगति से इतना रोचक बनता था कि श्रोता-समुदाय पूरे तन-मन से उसमें डूब जाता। आचार्यश्री के व्याख्यान विविध आयामों और विविध विषयों का सौम्य शुभ्र वितान लिए होते थे। वे कभी विज्ञान की अधुनातन खोज का जिक्र करते तो कभी किसी दंगे, मारधाड़ या किसी कथानक का स्मरण दिलाते हुए मनुष्य को अपने कर्तव्य के प्रति सचेत रहने का उपदेश देते।

जयपुर चातुर्मास की एक धर्मसभा में बंदरों का अचानक उत्पात होने से शांति व्यवस्था गड़बड़ाई तब आचार्यश्री ने परिस्थिति को भांपते हुए, बंदरों की तुलना मनुष्य से करते हुए मीठी चुटकी से वातावरण को शांत कर दिया। उन्होंने कहा- ''बंदरों ने अपना ध्येय सिर्फ तोड़-फोड़ करना, इधर-उधर कूदना-फांदना या वस्तुओं को ले जाकर बिखेर देना ही समझ लिया है। आज के मानव अपने जीवन के महत्व को समझते हैं या बंदरों की भांति ही इधर-उधर लोगों को आपस में लड़ा भिड़ाकर, कटुता फैलाकर जीवन में अव्यवस्था पैदा करते हैं। यदि यह स्थिति तुलनात्मक दृष्टि से किसी के जीवन में व्याप्त हो तो समझना चाहिये कि अभी हमारे जीवन में सुसंस्कारों का कुछ भी प्रवेश नहीं कर पाया है।'' इस प्रकार उनके व्याख्यान किसी उपयुक्त संदर्भ से जुड़ जाया करते थे।

अपने व्याख्यान को अधिक प्रभावी, ग्राह्य और संगत बनाने के लिए आचार्यश्री श्रोताओं के साथ सदैव तालमेल बनाये रखते थे और समय-समय पर उन्हें आत्मीय संबोधित देते रहते थे जिससे सबका ध्यान उनकी ओर बना रहे। अपनी बात का सार-रूप प्रस्तुत कर मनन के लिए भी वे प्रेरित करते और सीख भरी बात भी कह जाते। यथा-

- 'बंधुओ ! हां तो मैं कह रहा था....।'
- 'अब मैं कल के छोड़े हुए कथानक पर आता हूं....।'
- 'इस विषय में तो मैं अपनी साधु-मर्यादा के अनुसार ही कुछ कह सकता हूं।'

व्याख्यान के बीच-बीच में प्रसंगानुसार जीवनमूल्यों से जुड़ी बहुत सी सारपूर्ण बातों का वे समावेश करते रहते जिससे सहज ही सबका ध्यान आकृष्ट रहता। यह स्थिति यदि सोचने और ग्रहण करने को मजबूर करती तो आत्मचिंतन के लिए भी प्रेरित करती थी। कई बार तत्काल उसका प्रभाव भी देखने को मिलता। कुछ उदाहरण-

- 'मानव जीवन सभी शक्तियों के विकास का केन्द्र है। प्रत्येक मानव को जो-जो शक्तियां उसके भीतर छिपी हुई हैं, उनका विकास करना चाहिए।'
- 'आज भौतिक विकास तो चारों ओर हो रहा है किंतु आध्यात्मिकता की ओर कुछ कम लोगों का ध्यान जा पाया है। इस दृष्टि से मानव अभी परतंत्र ही बना हुआ है।'

आचार्यश्री की जब भी विशिष्ट व्यक्तियों, विद्वानों, राष्ट्रनेताओं तथा समाज के कर्णधारों से भेंट होती तब उन्हें उनसे विविध प्रकार के सवाल सुनने को मिलते थे। जवाब में आचार्यश्री जो कुछ देखते, सुनते, अनुभव करते उसके आधार पर अपने विचार व्यक्त करते थे। उनके ये विचार साफ-सुथरे, स्पष्ट तथा सारयुक्त होते। इनसे उनकी व्यावहारिक लोकदृष्टि, मौलिक चिंतन एवं निराली सूझबूझ का पता चलता था। कतिपय उदाहरण द्रष्टव्य हैं -

-'साधुमार्ग निष्कंटक नहीं है। वह दिखता सरल है मगर है कठिन। मर्यादा पालन, आत्मानुसंधान, अनवरत स्वाध्याय, सत्य की खोज, शिथिलाचार का विरोध, लोकहित के लिए कटिबद्धता, उदारता, समन्वय, विश्वमैत्री आदि साधुमार्ग के मूल आधार हैं।'

- 'विचार, आचार और उच्चार जब तीनों की एकरूपता बनती है उस वक्त मनुष्य के स्वयं के जीवन की विषमताओं की तमाम स्थितियां समाहित हो जाती हैं।'

इस प्रकार उनकी दृष्टि केवल धर्मशास्त्रों, पौराणिक कथाओं तथा सूत्रों के वचन-व्याख्यानों तक ही सीमित नहीं रहकर लोक और समाज से जुड़े विविध आयामों, व्यवहारों और अनुभव-पिंडों तक विस्तृत रहती थी, जिससे जनमानस को वह गंभीरता से प्रभावित कर पाती थी। धारावाहिक कथा-प्रसंगानुकूल वे अपना मंतव्य भी स्पष्ट करते थे और श्रोताओं की मन:स्थिति का ध्यान रखते हुए रूपक के माध्यम से भी आधुनिक जीवनधर्म के पक्ष को उद्घाटित करते चलते थे जैसे-

-'वैद्यराजजी समझ गये कि मरीज ने उल्टी पुड़ियायें ले ली हैं। जो पुड़िया अंदर में लेने की थी उसका चमड़ी पर लेप कर दिया गया और जो लेप करने की थी उसको अंदर ले लिया इसलिए उसका रोग बढ़ गया।'

- 'हमारे पास धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की चार पुड़ियाएं हैं। इन चार पुड़ियाओं में से दो जो धर्म और मोक्ष की हैं, अंदर ले लो, शहद के साथ, जिससे सारा जीवन पवित्र और संस्कारित बने और बाकी दो पुड़ियाएं अर्थ और काम की हैं उनको ऊपर लेप के रूप में लें।'

समय के पाबंद गुरुदेव :

आचार्यश्री समय के बड़े पाबंद थे। उनका हर कार्य समयबद्ध हो इसके लिए वे बड़े सजग रहते थे। उनका बहुत सारा समय तो निजी साधना का रहता था जिसमें वे किंचित भी कमी अथवा शिथिलता नहीं आने देना चाहते थे। वे यह कहते भी थे कि साधुत्व अंगीकार करने के पीछे आत्म-साधना का भाव ही मुख्य होता है।

व्याख्यान के लिए भी उनका जो समय निर्धारित रहता था उसका वे पूर्णतया पालन करते थे और कई बार महत्वपूर्ण विषय के प्रतिपादन के बीच भी समय को भांपकर चाहते हुए भी वे आगे नहीं बढ़ते थे और इसकी सूचना भी देते थे कि व्याख्यान समाप्ति की ओर है इस कारण यह प्रसंग आगे नहीं बढ़ाया जा रहा है।

ऐसा समय भी आता जब कोई दिलचस्प बात चल रही होती और सभी महसूस करते कि यह चलती ही रहे किंतु आचार्यश्री उस पर विराम लगाना ही उचित समझते। उन्हें समय की पाबंदी का ध्यान रहता और समयानुसार ही वे अपनी जीवनचर्या अथवा धर्मचर्या को बांधे रहते। उनके स्पष्ट संकेत-कथन भी रहते-

- 'मैं अभी इस विषय को इतना ही कहकर समाप्त करता हूं।'
- 'मेरी भावना थी कि मैं इसको आगे बढ़ाऊं लेकिन समय हो गया है।'

-शेष पृष्ठ छह पर

डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की करीब 90 पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से बहुत अप्राप्य हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ 'लोक मनस्वी' प्रकाशन प्रक्रिया में है। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

पुस्तक का नाम	मूल्य
भारतीय लोकनाट्य	1500/
परंपरा का लोक	475/
आदिवासी लोक	350/-
जनजाति जीवन और संस्कृति	295/-
महाराष्ट्र के लोकनृत्य	200/-
आदिवासी जीवनधारा	395/-
जनजातियों के धार्मिक सरोकार	150/-
राजस्थान के लोकनृत्य	200/-
गुजरात के लोकनृत्य	200/-
राजस्थान के लोक देवी देवता-	150/-
भारतीय लोकमाध्यम	75/-
अजूबा भारत	200/-
पाबूजी की पड़	50/-
लोककलाओं का आजादीकरण	250/-
उदयपुर के आदिवासी	250/-
निर्भय मीरां	250/-
रंग रूड़ो राजस्थान	100/-
कुंवारे देश के आदिवासी	100/-
जन्हें मैं जानता हूं	100/-

शब्द रंजन के सहयोगार्थ

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
साहित्यिक चौपाल	500/
वार्षिक संस्थागत	300/
वार्षिक व्यक्तिगत	250/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(**Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

कृपया रचनाएं ई-मेल से भेजें तो सुविधानक शीघ्र प्राप्त होंगी।

shabdranjanudr@gmail.com

डॉ. पूरन सहगल को शिखर सम्मान

उज्जैन की ख्यात साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था प्रकिकल्पा ने इस वर्ष का शिखर सम्मान डॉ. पूरन सहगल को उनकी साहित्यिक एवं सांस्कृतिक सेवाओं के लिए प्रदान करने का निर्णय लिया है। यह संस्था प्रतिवर्ष किसी एक विद्वान को शिखर सम्मान से सम्मानित करती है। गतवर्ष यह सम्मान विक्रमादित्य शोध पीठ के निदेशक डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित को दिया था। डॉ. सहगल को यह सम्मान उज्जैन में समारोहपूर्वक प्रदान किया जाएगा।

डॉ. भानावत को 'एडोल्फ -माग्दालेना हैनी' पुरस्कार

उदयपुर। श्री द्वारका सेवा निधि, जयपुर ने हिन्दी साहित्य की गद्य एवं पद्य विधाओं में विशेष योगदान पर वर्ष 2015 के 'एडोल्फ-माग्दालेना हैनी' पुरस्कार हेतु प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. महेन्द्र भानावत का नाम चयनित किया है।

श्री द्वारका सेवा निधि के सचिव चन्द्रकांत जोशी के अनुसार आगामी 15 अक्टूबर को आयोजित समारोह में इस पुरस्कार के अंतर्गत शॉल, प्रशस्तिपत्र, चांदी का श्रीफल सहित 41 हजार की राशि प्रदान की जायेगी। समारोह जयपुर में विद्याश्रम स्कूल के महाराणा प्रताप सभागार में सायं 5 बजे प्रारंभ होगा।

उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व यह पुरस्कार डॉ. हरिराम आचार्य तथा डॉ. कमलकिशोर गोयनका को प्रदान किया जा चुका है। चयन समिति में देवर्षि कलानाथ शास्त्री, डॉ. अमरसिंह राठौड़, डॉ. हरिराम आचार्य तथा डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' थे जिनकी सर्वसम्मति रही। ज्ञातव्य हो कि डॉ. भानावत की हिन्दी साहित्य एवं लोकसंस्कृति विषयक अब तक 90 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

हिन्दुस्तान जिंक को 'नेशनल अवार्ड'

उदयपुर। कन्फेडरेशन ऑफ इण्डियन इण्डस्ट्री ने हिन्दुस्तान ज़िंक की इकाई दरीबा स्मेल्टर कॉम्पलेक्स की 'नोटवर्दी वाटर एफिशिएन्ट यूनिट' को उत्कृष्ट जल प्रबन्धन के लिए 'नेशनल अवार्ड-2016' से सम्मानित किया। यह सम्मान जिंक़ की ओर से सह महाप्रबंधक मनोज अग्रवाल, एसोसिएट मैनेजर अंकित मिश्रा तथा रोहित विजय ने ग्रहण किया। यह जानकारी हिन्दुस्तान जिंक के हेड-कोर्पोरेट कम्यूनिकेशन पवन कौशिक ने दी।

नए मेन्यु की शुरूआत

उदयपुर। द ललित लक्ष्मी विलास पैलेस उदयपुर में मल्टी कुज़ीन आल डे डाइनिंग रेस्तरां पद्मिनी ने मेहमानों को नया रिफ्रेशिंग डायनिंग अहसास कराने के साथ ही सर्दियों के लिए अपना नया मेन्यु तैयार किया है। इस नई खोज को सभी ललित ग्रुप ऑफ होटल्स में, बेमिसाल लज़ीज फ्लेवर्स, को नए रंगों एवं अंदाज़ में पेश करना शामिल है।

नए मेन्यु की शुरूआत करते हुए फूड एंड बेवरेज मैनेजर देबेन्द्र ओझा ने कहा कि उत्साही शेफ की टीम द्वारा खास तौर से बनाया गए नये मेन्यु में मेहमानों की भूख और पेट का खास ध्यान रखा गया है। इसमें अपने खुद के उगाए गए ताजे एवं स्वादिष्ट फलों एवं सब्जियों को खास जगह दी गई है। यह शानदार मेन्यु ललित होटल्स की हाथ से चुनी गई खास डिश पर फोकस करता है। इन्हें बनाने में सरल एवं पारंपरिक पाक कला का उपयेाग करते हुए ग्रिल्ड, स्टीम्ड, हल्को फ्राई, बेक किए भोजन को उसके असली स्वाद में पेश किया गया है। साथ ही, ग्लूटन फ्री डिश भी अनुरोध पर प्राप्त की जा सकती हैं।

एक्जीक्यूटिव शेफ प्रांजल गोगोई ने कहा कि कोई भी मेहमान लैम्ब रॉयल्टी बर्गर, डेविल्स ऑन होर्सबैक, फ्रेंच अनियन सूप, न्यूज़ीलैंड लैम्ब चॉप्स, ललित सिग्नेचर पिज्जा, रिसोतो डि पेस्टो जैसी अन्य डिश के साथ इटालियन एवं कांटिनेंटल फ्लेवर्स का स्वाद चख सकता है। मिष्ठानों में एपल क्रम्बल केक (अंडा रहित), रसमलाई और बेहद फ्रेग्रेंट चॉकलेट मारक्वीज़ जैसे डेजर्ट अपने आप में अनूठे हैं।

रेजीडेंट मैनेजर गौरव देब ने कहा कि पद्मिनी में नया मेन्यु छोटे से छोटे अतिथि का भी सत्कार करने में पीछे नहीं है। इनका खास ध्यान रखकर रोल अराउंड पिज्जा, बुल्स आई बर्गर और न्यू स्माइली एलियन पैनकेक तैयार किए गए हैं। समूचे विश्व की विभिन्न संस्कृतियों तथा भोजन के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी एकत्र करके हमने खास तौर से यह मेन्यु तैयार किया है जिसमें लोकल फ्लेवर्स के अनुसार अंतर्राष्ट्रीय कुज़ीन का आनन्द।

कारोबार तेजी से ज्योतिषियों पर निर्भर कर रहा

उदयपुर। आज की दुनियां जोखिम और अनिश्चितताओं से भरी है। कहीं-न-कहीं भाग्य में उतार-चढ़ाव रहता ही है। लोग व्यापार और औद्योगिक वातावरण में कड़ी प्रतियोगिता और अस्थिरता की वजह से ज्योतिषियों पर अधिक से अधिक निर्भर रहने लगे हैं। वर्ष 2015-16 के दौरान व्यापारियों द्वारा गणेशास्पीकडॉटकॉम को कॉल की गई। गणेशास्पीकडॉटकॉम भारत का नंबर एक और दुनिया के तीसरे नंबर का भरोसेमंद व विश्वसनीय ज्योतिष पोर्टल है। पोर्टल द्वारा जारी आकड़ों से के अनुसार अप्रैल 2016 में व्यापारियों और उद्यिमयों द्वारा 30,000 कॉल की गई जबकि गतवर्ष अप्रैल में यही संख्या 27,500 थी। इस तरह से 9.09 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। मई 2016 में यह संख्या 31,000 रही जबकि गतवर्ष मई में यह संख्या 28,300 कॉल थी। इस माह में 9.54 प्रतिशत की वृद्धि की हुई। इसी तरह जून 2016 में 33,000 रही जबकि गतवर्ष में यह संख्या 29,900 कॉल थी।

कानोड़ के 'सुंदर' का हमशक्ल 'तनय'

डांस प्लस में टॉप कर 25 लाख जीते

मैंने कहा, 'आप कितने ही जल-गांव और जल-समुद्र में रहें, कानोड़ के कमल ही बने रहेंगे।'

सन् 1950 के लगभग तनय के दादा श्री सुंदरलाल मल्हारा कानोड़ से आगे अध्ययन के लिए जलगांव चले गये और वहीं बस गये। वे ग्रीष्मावकाश में आते। कुछ रहते और पुन: चले जाते। उनका मुख्य पहनावा सिलीसिलाई नाड़ेवाली धोती सबके आकर्षण का केन्द्र थी। स्वभाव से वे बड़े मिलनसार, आत्मीय दुबले-पतले और हंसमुंख थे।

सन् 1954 में तो मैंने भी कानोड़ छोड़ दिया। उदयपुर में रहने के बाद भी उनसे लगातार संपर्क बना रहा। बाहर जो लोग पढ़ने गये उनमें से जिन लोगों ने कानोड़ छोड़ा, वे जहां भी बसे, कानोड़ उनके स्मृति-केन्द्र में रहा और मेरा उनसे किसी न किसी प्रकार स्नेह-संपर्क बना रहा। सुंदरजी उम्र में, अधिक नहीं तो भी, पांच-सात वर्ष मुझसे बड़े थे। उदयपुर में भी उनसे अपने निवास पर भेंट कर हम सदा ही कानोड़ के अपने साथियों के संबंध में ही उनकी कुशलक्षेम से लेकर उनके द्वारा किये जा रहे प्रशंसनीय कार्यों के बारे में जानकर आल्हादित होते।

सुंदरजी जलगांव में उनके द्वारा किये जा रहे सामाजिक कार्यों, शिक्षाजनित सेवाओं, ध्यान-स्वाध्याय से जुड़ी प्रवृत्तियों की मुख्य जानकारी देते। समानता हमारे में यह रही कि हम दोनों का परिवार औसत से भी अधिक नीचे जीवनयापन करने वाला रहा किंतु पूर्वजों का संस्कार और स्वाभिमान कभी नीचे नहीं आने दिया।

सुंदरजी के कई पत्र मेरे पास सुरक्षित हैं। उन्होंने सदैव ही मुझे छोटे भाई की तरह, अपार स्नेह और अपनत्व दिया। कहा भी कि जलगांव में रहते हुए भी कानोड़ छूटता नहीं है। छोड़ना चाहता भी नहीं। निरन्तर संपर्क बना रहे इसीलिए मैंने भी अपना विवाह कानोड़ में किया और मेरे देखादेख सुंदरजी ने भी अपने पुत्र आनंद का विवाह वहीं में किया। मैंने कहा, आप कितने ही जल-गांव और जल-समुद्र में रहें, कानोड़ के कमल ही बने रहेंगे।

कानोड़ के आसपास छोटे-मोटे कई तालाब हैं किंतु वहां का कमलवाला तालाब सबको आकर्षित और प्रेरणा देता रहा है। हम लोग उसी में तैरना और ऊंचाई से गंठे लगाना सीखे। सुंदरजी यह बात सुन इतने खुश हुए कि मुझे अपनी बांहों में कैद कर हिये से लिपटा दिया। मैं ही नहीं, कानोड़ से जो भी बाहर गया, अपने साथ उस तालाब की पाल का मखमली काला गारा (मिट्टी) ले जाना नहीं भूला। सिर के बाल धोने के लिए सब उसी माटी का प्रयोग करते। मैं तो अपने पूरे शरीर पर ही उसका लेप कर समृद्ध-शकुन-प्राप्ति का एहसास करता।

सो आनंद का विवाह उदय जैन के बाद जवाहर विद्यापीठ के संचालक बने शिक्षाविद सोहन धींग की सुपुत्री डॉ. नलिनी से हुआ। सोहनजी का परिवार हमारे परिवार से नैकट्य लिये ही नहीं था, निवास भी आसपास नहीं, बहुत पास-पास था।

तो, तना के रूप में दादाश्री सुंदरजी का पौत्र 'तनय' उनकी हमशक्ल का ही प्रसाद है। इस स्वर्ण मेल पर सुहागे के रूप में नानाश्री सोहन का सम्मोहक लावण्य है। दोनों के ही जैनत्व-संस्कार, शरीर-संरचना, रंग-रूप, स्मित-मुस्कान और छरहरापन स्टार प्लस के टीवी सिरीयल में डांस के दौरान देखने को मिले। तनय उन सब प्रतियोगियों में सबसे छोटी उम्र का केवल 14 वर्ष का दुबला-पतला 9वीं कक्षा का छात्र है जिसने बड़े उत्साहजनित साहसी आत्मविश्वास से फाइनल तक अपनी पहुंच दी और ग्रुप कंटेस्टेंट वाइल्स रिपर्स क्रू पीयूष भगत और सुशांत खत्री को पीछे छोड़ा और अपनी पब्लिक बढ़त बढ़ाकर इनाम स्वरूप 25 लाख रूपये और हुंडई कार जीती।

डांस प्लस-सीजन 2 का कड़ा मुकाबला जिसने भी देखा उसने तनय के भयमुक्त हौसलेबाज बड़े संघर्षजनित उस दगदगे समय में अपने को भी शरीक किया होगा। शो के सुपर जज रेमो डिसूजा तथा कैप्टंस शक्ति मोहन, धर्मेश और पुनीत के साथ फिनाले एपिसोड में अभिनेता रणवीर कपूर एवं ओलंपियन साक्षी मलिक की उपस्थिति ने आयोजन के उत्कर्ष को और ऊंचाई दी।

कानोड़ के और भी कमनीय रूप हैं। 'कौन बनेगा करोड़पति' में ताज मोहम्मद अपना रूप दिखा 'ताज' बन चुके हैं। ताज तथा तनय एक ही लय-ताल-छंद की छमक लिए देशव्यापी हो गये हैं। हमारी बधाई।

- डॉ. महेन्द्र भानावत

समाज और शिक्षक मिलकर अच्छे नागरिक बनाएं : कोठारी

उदयपुर। सामाजिक न्याय हेतु शैक्षिक नेतृत्व के मुद्दों एवं चुनौतियों पर तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन 19 से 21 सितंबर को हुआ। राजस्थान शैक्षिक प्रशासन एवं प्रबंध समिति (आरसीईएएम) की ओर से आयोजित सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि माननीय न्यायाधिपति सज्जनसिंह कोठारी लोकायुक्त राजस्थान ने कहा कि आज के इस वैश्विक युग में समानता और असमानता का दौर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। शिक्षाविदों के लिए यह चुनौती है परन्तु अच्छे नागरिक बनाने की जिम्मेदारी समाज और शिक्षाविदों की समान रूप से है।

उन्होंने आर्थिक एवं सामाजिक स्तर पर विकास के संदर्भ में सामाजिक न्याय की भूमिका को विस्तार से समझाते हुए सरकार तथा शैक्षिक संस्थाओं को प्रशासकों और शिक्षकों को जवाबदेही सुनिश्चित करने की बात कही। श्री कोठारी ने सभी को सांस्कृतिक, आर्थिक और सामाजिक रूप से समान अधिकार उपलब्ध हों। न्यूनतम मापदंड तय होने के साथ ही पारस्परिक जिम्मेदारी सुनिश्चत होने से इस विसंगति से उभरा जा सकता है।

सम्मेलन में देश-विदेश की 200 नामी हस्तियों ने गहन विचार-मंथन किया। उद्घाटन सत्र में कनाडा के कॉमनवेल्थ काउंसिल ऑफ एज्युकेशन एडमिनिस्ट्रेशन एवं मैनेजमेंट के अध्यक्ष डॉ. केन ब्रिन, रेडफोर्ड विश्वविद्यालय वर्जिनिया के प्रो. ग्लेन टी. मार्टिन, आध्यत्मिक हीलिंग संस्थान के संस्थापक डॉ. लाज उतरेजा, ओहियो विवि अमेरिका के एसीई प्रो. एसबी सिंह, आईएएसई विवि सरदारशहर के कुलपति डॉ. दिनेश कुमार, एमपीयूएटी के कुलपति प्रो. उमाशंकर शर्मा एवं सचिव आरसीईएम की सचिव डॉ. इन्दू कोठारी ने सामाजिक न्याय के क्षेत्र में प्रो. हेमलता तलेसरा को लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड 'एजुकेशनल लीडरशिप फॉर सोशल जस्टिस' से सम्मानित किया।

तकीनीकी सत्रों में स्कूली शिक्षा में सुधार, अध्यापक शिक्षा के माध्यम से वैश्विक सामाजिक न्याय, शिक्षा में तकनीकी गरीबी व आधारभूत परिवर्तन, महिला शिक्षा विषयों पर ऑस्ट्रेलिया के डॉ. डेविड गुर, द.अफ्रीका के डॉ. ले.बी रामरथन, गुवाहाटी के डॉ. डुलुमनी गोस्वामी, नागपुर की डॉ. उषाशी गुहा, मालपुरा गुजरात की डॉ. उषा बक्षी, नाइजीरिया के वीओ इगबिने वेक्स, मुम्बई की डॉ. हर्षा मर्चेन्ट, लाडनूं के डॉ. मनीष भटनागर, नइजीरिया के प्रो. फेलिशिया, द. अफ्रीका के डॉ. इबाना नेकर, केनेडा के डॉ. किरीक एंडरसन, मुम्बई के डॉ. विजयमूर्ति, बड़ोदा के डॉ. पुष्पनाधम, आस्ट्रेलिया के नाडी जरनी, केरल के एन.के वेणुगोपालन, नई दिल्ली की डॉ. अदिति सरन तथा मुम्बई की डॉ. मिंटू सिन्हा ने मंथन किया। समापन समारोह में 12 विभूतियों को सीसीईएएम फैलोशिप से सम्मानित किया गया।

शब्द रंजन

उदयपुर, शनिवार 01 अक्टूबर 2016

सम्पादकीय

जरूरी है कूटनीतिक चातुर्य

बहुत प्रयत्न करने पर भी जब वैमनस्य बढ़ता रहता है और घृणा का समन्दर विस्फोटक होने लगता है तब युद्ध ही एक रास्ता बचता है और अनिवार्य हो जाता है। हल्दीघाटी युद्ध के साथ भी यही हुआ। राजा मानसिंह ने उदयसागर की पाल पर जब प्रताप से भेंट की तब यही व्यूह रचना रची गई थी सो युद्ध हुआ और जो कुछ घटित हुआ उसकी तह की पर्तें अभी तक बंद हैं। इसे कूटनीतिक चतुराई की संज्ञा दे सकते हैं।

भारत-पाक के सम्बंधों पर भी इसी तरह से विचार करना होगा। पाकिस्तानी हकूमत में मानवीयता का पक्ष नदारद हो चुका है। उसे कितना ही नीचा देखना पड़े, वह अपनी अकड़ कभी कम करने वाला नहीं है। हिंसा का रास्ता ही जिसका सबसे बड़ा हथियार हो उससे समझाइश से मना लेना संभव भी नहीं है।

अभी तो आतंक फैलाना, मनमाने ढंग से हिंसक प्रवृत्तियों को बढ़ावा देना, बिना किसी परिणाम के सनकी बने रहकर भारत को हर तरह से मुसीबत में डालने में ही वह अपनी मर्दानगी समझ रहा है। उसे यह भी डर नहीं कि इसका परिणाम उसके स्वयं के लिए भी घातक हो सकता है। अपनी सनक में वह कट्टर है। पूरी दुनियां में वह आतंकवादी देश सिद्ध हो चुका है और हर तरफ उसकी हेठी हो रही है मगर वह अपने हाल में, बेचैनी में भी चैन की बांसुरी फूंक रहा है।

'जैसा करोगे वैसा भरोगे' सिद्धांत पर उसे कोई भरोसा नहीं है। सबकुछ जानते हुए भी वह अनजान, जिद्दी बना हुआ है। अपनी पराजय पर भी वह फूल रहा है। गृह-हिंसा पर भी उसकी मुस्कान कम नहीं हुई है। ऐसी स्थिति में भारत के लिए कूटनीतिक चातुर्य ही एकमात्र विकल्प रह जाता है।

इसकी भूमिका प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बहुत पहले ही प्रारंभ कर दी है। उन्होंने प्रारंभ से ही यह सब जान लिया था और उसके हल तलाशी के लिए भी सक्रिय हो गये थे। उनमें कूटनीतिक प्रबंधन की पूरी क्षमता और उतना ही आत्मविश्वास भी है। उनके सभी साथी भी उनके अनुकूल हैं। जनता तो उनके साथ अपने सबल कंधे लिए हर वक्त जय-विजय की दुआ लिए त्वरित चौकन्नी बनी हुई है।

भारत अहिंसा प्रधान राष्ट्र है। इस धरती पर हिंसाजनित कार्यवाही की तुलना में अध्यात्म और अहिंसा का ही अथाह बोलबाला रहा है और इस वजह से पूरे विश्व में इसकी गहरी पैठ और पहचान बनी हुई है। हिंसा का रास्ता दिखता हुआ कितना ही बलवान और ताकतवर हो, अंत में उसे औंधे मुंह की खानी होती है। विश्व में जितने भी आक्रामक युद्ध हुए हैं उनका परिणाम कभी सुखद नहीं रहा। नीति और कूटनीतिक चालों से सदा ही इस देश ने प्रतिष्ठा अर्जित की है। इसीलिए कहा भी गया कि- यह भारत एक ऐसा जलज है कि जिस पर जल का दाग भी नहीं लगता है। जय भारत।

पत्र-पिटारी

'शब्द रंजन' पढ़कर उन बड़ी पत्रिकाओं की याद ताजा हो जाती है जो बड़ी मेहनत और कुशलता से पाठकों की नब्ज पहचान सर्वथा नई सामग्री से रू-ब-रू कराती थी। अंक 15 में 'इंकलाबी पांवों में यादों की जिन्दगी' में स्वरूप व्यास को पढ़कर पहलीबार ही सही, उस व्यक्ति को जानने का सौभाग्य मिला जिसकी वाणी अनेकों बार सिनेमागृहों में सुनकर लट्टू होते रहे। उदयपुर की हाईकोर्ट पर 2 सितम्बर 1942 को झंडा फहराने के लिए उन्होंने जो बहादुरी और देशभक्ति दिखाई उसका जिक्र अब तक ओझल ही रहा। कभी-कभी घटित घटना से अधिक उस घटना से पूर्व के प्रयोजन-कर्म का महत्व अधिक कारगर होता है जिससे इतिहासकार भी अजाना ही रहता है। स्वतंत्रता सेनानियों में स्वरूप व्यास जैसे नींव के पत्थर कई रहे पर उनको हमने नहीं जाना और न जानने की अधिक कोशिश ही की। ऐसे लोग भी हुए जिन्होंने जानबूझ कर अपने को छिपाये रखा और कोई लाभ नहीं लिया। इस अलीगली में उन कुछ लोगों ने भी अपनी रोटियां सेकी जो स्वतंत्रता सेनानी थे नहीं, पर बन गये। लेकिन सरकार ने स्वतंत्रता सेनानियों को पेंशन देकर उनके प्रति जो उच्च सम्मान दरसाया वह सर्वप्रकारेण प्रशंसनीय है।

-विकल्प मेहता, इलाहाबाद

डॉ. मालती को हिंदी प्रचारक शताब्दी सम्मान

श्री नाथद्वारा साहित्य मंडल द्वारा हिंदी दिवस पर सुपरिचित लेखिका और कवयित्री डॉ. मालती शर्मा को 'हिन्दी प्रचारक शताब्दी सम्मान' से नवाजा गया। सम्मान के तहत उन्हें श्रीनाथजी की तस्वीर, प्रशस्तिपत्र एवं 11 हजार रूपये प्रदान किये गये। उल्लेखनीय है कि इससे पूर्व भी साहित्य मंडल द्वारा डॉ. मालती शर्मा को लोककला विभूषण से सम्मानित किया जा चुका है।

उदयपुर की धरती पर ऐतिहासिक कवि सम्मेलन : मुनव्वर राणा

उदयपुर। देश-विदेश में कवि के रूप में सुख्यात शायर मुनव्वर राणा ने लोककला मंडल में आयोजित काव्योदय की अपार सफलता पर न केवल अपना उल्लास व्यक्त किया अपितु आयोजक अल्पेश लोढ़ा तथा संयोजक डॉ. तुक्तक भानावत का पगड़ी और शॉल से हार्दिक अभिनंदन किया। बाद में उन्होंने बताया भी कि उनके जीवनकाल में यह कवि सम्मेलन कई दृष्टियों से यादगार बन गया है। प्रथम तो इसके नाम में ही इस सौंदर्यपूरित शहर की छवि अंकित है फिर राणा प्रताप से प्रेरित हो उन्होंने अपने नाम के साथ 'राणा' पद को शोभित किया और मुनव्वर राणा बने।

कवि सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में राजघराने के राणा-प्रतिनिधि महाराजकुमार लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ की अंत तक उपस्थिति देख मेरा सीना गर्व से फूल गया।

उन्होंने कहा कि कवि सम्मेलन को सुनने के लिए ऐतिहासिक भीड़ भी बड़ी संयत लगी। श्रोता अंत तक बड़ी तल्लीनता से रसविभोर होते रहे और कवियों ने भी उन्मुक्त रस-वर्षा की। रंगमंच की साजसज्जा और उत्तम व्यवस्था ने भी मुझे अभिभूत किये रखा इसीलिए आयोजक और संयोजक का अभिनंदन मुझे प्रेरित कर गया। दोनों की आत्मीयता को मेरा सलाम। ये सदैव सलामत रहें।

उदयपुर में फिल्म की मयूर एकेडमी

उदयपुर। मैत्री फिल्म के बैनर तले मयूर फिल्म एकेडमी का शुभारंभ शनिवार को नगर निगम महापौर चन्द्रसिंह कोठारी ने किया। इस अवसर

पर मैत्री फिल्म्स के निदेशक सुधीर बोड़ा, मयूर एकेडमी के प्रमुख डॉ. पंकज साहू तथा निदेशक गुंजन खिड़िया उपस्थित थे।

महापौर ने सुधीर बोड़ा द्वारा निर्देशित और आर. के. भगवती द्वारा लिखित हिंदी फिल्म 'नूर बाबू' का मुहूर्त शॉट दिया और आशा व्यक्त की कि यह फिल्म मील का पत्थर साबित होगी। निर्देशक सुधीर बोड़ा को बधाई देते हुए आग्रह किया कि वे इस फिल्म में उदयपुर की प्रतिभाओं को भी अवसर दें। सुधीर बोड़ा ने आश्वासन दिया कि इस फिल्म की 90 प्रतिशत शूटिंग उदयपुर और आसपास के लोकेशन पर की जायेगी साथ ही अधिकतर कलाकार भी यहीं से लिए जायेंगे।

डॉ. पंकज साहू ने कहा कि एकेडमी की स्थापना फिल्म निर्माण, मंचीय अभिनय, गायन और नृत्य प्रशिक्षण के लिए की गई है। फिल्म निर्माण की बारीकियां सिखाने व फिल्म/टीवी तथा अभिनय के प्रशिक्षण हेतु विशेषज्ञों की सेवाएं ली जायेंगी। प्रतिष्ठित मैत्री फिल्म्स के सहयोग से मयूर फिल्म एकेडेमी द्वारा संचालित लघु एवं दीर्घ अवधि के कोर्सेज के माध्यम से इन विधाओं का प्रशिक्षण दिया जाएगा। संगीत व नृत्य को प्रोत्साहन देने के लिए भी कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा।

गुंजन खिड़िया ने कहा कि लेकसिटी की खूबसूरती दुनिया भर में मशहूर है। कई ख्यात फिल्मों में यहां के दृश्य यादगार बने हुए हैं। ऐसी स्थिति में यहां के लोकेशन के साथ-साथ कलाकारों का भी कम दबदबा नहीं है। कई कलाकार अच्छे अवसर और बाहर जाने की मजबूरी के चलते आगे नहीं आ पा रहे हैं। ऐसी स्थिति में एकेडमी उनकी प्रतिभाओं की तलाश कर उन्हें तराशने की समुचित व्यवस्था के लिए संकल्पबद्ध है। उदघाटन समारोह में मैत्री फिल्म्स द्वारा निर्मित दो लघु फिल्मों का प्रदर्शन किया गया। सामाजिक सन्देश देने वाली इन फिल्मों में स्वच्छता और बागवानी पर विशेष जोर दिया गया है।

प्रार्थना

हे ईश्वर!
मेरे सिवा किसी को भी पानी का संकट न हो
हे ईश्वर!
मेरे सिवा किसी को भी रोटी की कमी न रहे
हे ईश्वर!
मेरे सिवा किसी को भी कपड़े की तकलीफ न हो
हे ईश्वर!
मेरे सिवा किसी को भी रहने की दिक्कत न हो
मेरा क्या ?
मैं तो किसी की भी टंकी से भर लाऊंगा पानी
किसी भी गली के नल पर लगा लूंगा नंबर
क्योंकि जब दूसरों को दिक्कत नहीं होगी
तो हर टंकी भरी मिलेगी पानी से
हर नल पर मिलेगी नंबर लगाने की सुविधा
जब हर एक के पास होगी
सिर ढकने को छत
मैं अपना झोपड़ा कहीं भी खड़ा करूं
कोई मुझसे लड़ने नहीं आएगा
इसलिए प्रार्थना है, हे ईश्वर!
किसी को भी रोटी, कपड़े, मकान की किल्लत न हो
बस मुझे इफरात ही इफरात है।

-रणजीत

तारा संस्थान में वृद्धजनों का सम्मान

उदयपुर। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण एवं तारा संस्थान द्वारा वृद्धजनों का सम्मान किया गया। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की पेनल एडवोकेट श्रीमती रितु मेहता ने विधिक जागरूकता अभियान के अन्तर्गत वृद्धजनों को प्राप्त विशेष अधिकारों की जानकारी दी। वार्ड पार्षद श्रीमती सीमा साहू ने कहा कि आज के युग में वृद्धजनों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है किन्तु तारा संस्थान द्वारा वृद्धजनों के लिये जो कार्य किये जा रहे हैं वह बहुत ही सराहनीय है। संस्थान अध्यक्ष कल्पना गोयल ने कहा कि मुझे बहुत खुशी हो रही है कि वृद्धजनों के लिये हम कुछ कार्य कर पा रहे हैं। कार्यकारी अधिकारी दीपेश मित्तल ने संस्थान की गतिविधियों की जानकारी दी। इसके साथ ही जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के श्री हितेश वैष्णव व अभिषेक का भी सराहनीय सहयोग रहा।

पोथीखाना

तीन पुस्तकें तेरह जैसी

-डॉ. भगवतीलाल व्यास-

'सीप' में समाया 'मुखर होता मौन'

श्रीमती रेखा लोढ़ा 'स्मित' के दो ताजा काव्य-संग्रह मेरे सामने हैं- 'सीप' और 'मुख होता मौन'। रेखाजी अपने विद्यार्थी जीवन से ही लिख रही हैं। अगर आपका मन संवेदनशील है तो आप कविता को अपने चारों तरफ बहती पायेंगे। नदी के पानी की तरह। नदी में खड़ा व्यक्ति जैसे नदी के सारे जल

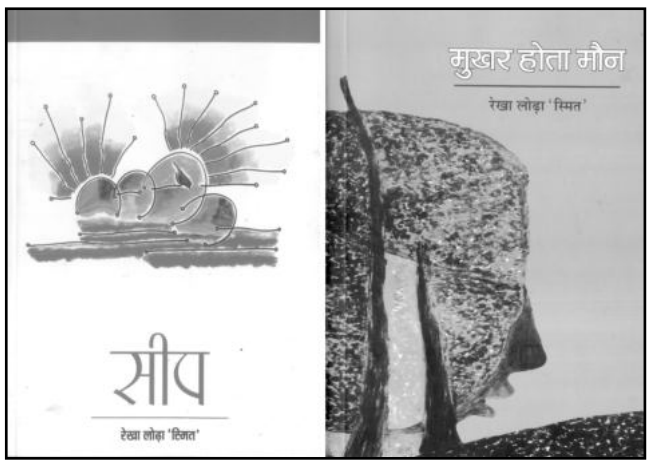

का उपयोग नहीं कर सकता, ठीक उसी तरह एक रचनाकार भी संवेदना की अकूत राशि को वाणी नहीं दे सकता।

यहीं से 'चयन' प्रक्रिया शुरू होती है जो रचना का प्रथम चरण है। निस्संदेह 'चयन' तो व्यक्ति अपनी रुचि से ही करता है। यही रुचि संवेदना के स्तर पर पाठकों को आकर्षित करती है। पाठक यदि उस रचना में कहीं न कहीं अपने को भी पा लेता है तो सृजन का यह अनुष्ठान सफल हो जाता है।

कविता का रास्ता आसान नहीं है। यह अधिसंख्यक लोगों का रास्ता भी नहीं है। फिर अच्छी कविता को समझने वाले तो और भी कम हैं। कविता का संबंध मनोजगत से है। हम मन की बात सुनने की फुर्सत ही नहीं पाते। हमारी भौतिक आवश्यकताओं और उनसे जुड़ी बातों की संख्या में दिनोंदिन अभिवृद्धि होती जा रही है। हमारी सारी ऊर्जा, हमारा सारा समय इन आवश्यकताओं से हाथापाई में ही गुजर जाता है।

ऐसे कठिन समय में कोई कविता लिखने का जोखिम उठाता है तो वह निस्संदेह आदरणीय है क्योंकि वह लगातार सूखते जा रहे संवेदना के पौधे को कुछ समय के लिए ही सही, यह अहसास तो दिला ही देता कि उसका अस्तित्व भी जरूरी है। रेखाजी यह जोखिम उठाती ही नहीं, एक साथ दो काव्य-संकलन साहित्य जगत को देकर पाठकों को भी प्रेरित करती हैं कि वे कम से कम कविता पढ़ने का जोखिम उठाएं।

अच्छी कविता मन से मन की बात 'बातचीत' है। कविता का यह 'सर्किट' तब पूरा होता है जब कवि भी मन से लिखे। खानापूर्ति के लिए नहीं। और पाठक भी मन से पढ़े। वैसे भी कविता आम लोगों की पठन-वरीता के क्रम में बहुत नीचे आती है। इस तथ्य को जानते हुए भी कविताएं खूब लिखी जा रही हैं और खूब छापी भी जा रही हैं।

'सीप' रेखाजी का पहला काव्य-संग्रह है। सीप में मोती की जिंदगी मौन की ही जिन्दगी है। जब वह सीप से बाहर आता है तब मुखर होता है। सच तो यह है कि सारी कविता मौन से मुखरता के बीच की यात्रा ही है। 'बच्चे खेलना भूल गये हैं' या उन्हें 'बड़ा आदमी' बनने के आतंक ने खेलना झूलने के लिए मजबूर कर दिया है। स्वाभाविक आचरण चाहे जिन कारणों से बदलना पड़े पर होता वह घातक ही है। यह बात आज के बच्चों की जिन्दगी और दिनचर्या का विश्लेषण करने से अच्छी तरह समझी जा सकती है। यह तथ्य 'नहीं खेलता कोई' कविता बखूबी अभिव्यक्त करती है।

अच्छी कविता लिखने के लिए काव्यशास्त्र नहीं, मन की किताब पढ़ने का हूनर कवि के पास होना चाहिए। मुझे खुशी है कि रेखाजी के पास यह हूनर है जो 'सीप' में साफ दिखता नहीं पर 'मुखर होता मौन' में दिखता मात्र ही नहीं है बल्कि लोगों को 'देखने' के लिए मजबूर भी कर देता है। लेखिका ने मौन की ऐसी मुखरता को वाणी देकर काव्यरूप में पाठकों तक पहुंचाने का प्रयास किया है।

'मुखर होता मौन' की रचनाएं छंदबद्ध हैं- गज़ल काव्य रूप में। इन गज़लों में परंपरागत रूमानियत वाली गज़लें हैं तो आज की जिन्दगी की कशमकश से दो-चार हाथ करने वाले आदमी के हौंसले की गज़लें भी हैं। इन गज़लों में आज के आदमी की संघर्ष-कथा भी और व्यथा भी है-

बड़े अरमान से हमने सजाये ख्वाब सूरज के
अंधेरे लूट जाते हैं, बड़ी तकलीफ होती है।
(पृ. 13)

कवि धर्म का संकेत करती कवयित्री की ये पंक्तियां उद्धतव्य हैं-

अगर कीच भी दे जमाना हमें जो
कमल की तरह हम दिलों में खिलेंगे।
लगे आपको बात कड़वी भले ही
सही जो लगेगा वही हम लिखेंगे।। (पृ. 139)

सही लिखना ही लिखना है। बाकी सब तो कागज रंगना है। सही और कम सही की कसौटी पाठक तय करता है। जो लेखन पाठक जितना ज्यादा छूता है वह उतना ही ज्यादा सही है। 'मुखर होता मौन' में छोटी और लम्बी दोनों प्रकार के 'बहर' की गज़लें हैं। छोटी बहर की एक गज़ल के चंद अशआर-

लोग वो जो वफा नहीं करते,
प्यार उनके फला नहीं करते।

तार इतने न खींच ए दिलबर,
टूट कर दिल मिला नहीं करते। (पृ.111)

रेखा 'स्मित' की कविता का कैनवेस बड़ा फैला हुआ है। आम आदमी के दिल और जिस्म की बात तो करता ही है पर वह उस सियासी दंद-फंद को भी बेपर्दा करने का हौंसला भी रखता है जिसने आम आदमी की तरक्की के नाम का ड्रामा तो खूब चतुराई से खेला है पर हकीकत कुछ और ही है-

धरोहर देश की हमने बहुत मुश्किल संभाली थी,
नहीं उसको बचाते हैं, बड़ी तकलीफ होती है।
बिलखते भूख से बच्चे गरीबों के हमेशा ही,
गधे दावत उड़ाते हैं, बड़ी तकलीफ होती है।
(पृ. 113)

कुल मिलाकर जिन्दगी के हालात आजकल कुछ ऐसे हो गये हैं कि खुदा का यह नायाब तोहफा जिन्दगी एक तमाशा बनकर रह गई है-

वक्त ही जब आज अंधा है तो है
खून रिश्तों का भी बिखरा है तो है।

ताल पर सबने नचाया है मुझे
जिन्दगी अपनी तमाशा है तो है।

आशा है, सुधी पाठक इन दोनों संकलनों में ऐसा कुछ पा सकेंगे जिसकी कविता के पाठक को तलाश रहती है।

धूप में पकती मोजर-मूंछ्यां :

'मोजर मूंछ्यां' राजस्थानी-हिन्दी कवि-लेखक डॉ. गोपाल राजगोपाल के राजस्थानी लघु आलेखों का संग्रह है। मक्की के पौधे में माजर, मोजर, मंजरी और मूंछ के आकार का गुच्छा निकलना इस बात का संकेत है कि भुट्टे आने की प्रक्रिया शुरू हो गई है।

प्रकृति की लीला भी बड़ी विचित्र है। मानव जगत में सफेद मूंछें परिपक्वता का प्रतीक हैं तो वनस्पति जगत में मक्की के पौधे में सफेद मूंछें कच्चेपन की निशानी है। भुट्टे की सफेद मूंछें सफेद से भूरी होती हुई लगभग काली या गहरी भूरी हो जाए तब समझना चाहिए कि भुट्टे में दाने आ गए हैं और भुट्टा पक गया है। लेखन की प्रक्रिया को भी इसी प्रारूप में देखें तो कहना चाहिए कि डॉ. गोपाल राजगोपाल का लेखन भी परिपक्वता की पागोथियों पर है। 'मोजर-मूंछ्यां' में ढाई बीसी (पचास) आलेख सम्मिलित हैं। लेखक ने 'म्हारी वात' में कहा है कि उनका पहला लेख सन् 2009 में प्रकाशित हुआ था और सन् 2016 में यह संग्रह हमारे सामने है।

विषय वस्तु की विविधता लिए इन लेखों की विशेषता यह है कि ये राजस्थान की मिट्टी की गंध समेटे यहां के लोकजीवन, लोकविश्वास और लोकाचार को रेखांकित करते हैं। भाषा में कहीं वर्णनात्मकता तो कहीं व्यंग्य की पैनी धार दिखाई देती है। मेरा ऐसा मानना है कि लेखन कर्म में ऊंचाई का कोई 'एवरेस्ट' नहीं है। आकाश तक गुंजाइश है और आकाश का कोई अंतिम छोर नहीं

है। यह लेखक की क्षमता पर निर्भर है कि वह किस ऊंचाई तक पहुंचकर अपनी पताका फहराए।

डॉ. राजगोपाल के लेखन में शब्दाडंबर नहीं है लेकिन सपाट बयानी भी नहीं है। वे लोगों को जैसा देखते हैं, परिवेश को जैसा पहचानते हैं, वैसा पाठक के सामने परोस देते हैं। उनकी यही सफलता और सहजता उन्हें एक विशेष पहचान देती है। घर में राज जमाया रो : बेटा रो न बायां रो, हाऊ काम में मोड़ो क्यूं : मोरत लारे दौड़ो क्यूं, चालो लेण में : रेवो केण में, गारंटी रो खेल : बेचो हेळ-भेळ, पाणी भरे भरतार : पोढ़े घर री नार जैसे शीर्षक साख भरते हैं कि लेखक ने लोकजीवन को बारीकी से देखते हुए विविध विषयों पर अपनी कलम चलाई है।

पुस्तक के आलेख आकार में लम्बे नहीं होने से सहज पठनीय और पचनीय हैं। आश्चर्य है कि चिकित्सक जैसे गंभीर और जटिल कर्म में निरत डॉ. राजगोपाल अपने लेखन में इतने सरल और सहज कैसे हैं? आशा है, पाठक इन लेखों के माध्यम से जीवन के विविध रूपों, रंगों और रसों का आस्वादन कर सकेंगे। तीनों पुस्तकें बोधि प्रकाशन, जयपुर से छपी हैं।

'एश्योर्ड 2 विन' ऑफर की पेशकश

उदयपुर। पैनासोनिक इंडिया प्रा. लि. ने 'एश्योर्ड 2 विन' फेस्टिव ऑफर की घोषणा की है। यह ऑफर सभी होम अप्लायंसेस और पैनासोनिक एलईडी टीवी पर निश्चित उपहार जीतने का मौका देगा। पैनासोनिक इंडिया के प्रेसिडेंट एवं सीईओ मनीष शर्मा ने कहा कि अपनी मार्केटिंग की रणनीति के तहत पैनासोनिक भारत में एटीएल एवं बीटीएल गतिविधियों में 85 करोड़ रु. का निवेश करेगी। प्रमोशनल ऑफर 16 नवंबर तक चलेगा। यह ऑफर टेलीविज़न, रेफ्रिजरेटर, वॉशिंग मशीन, प्योरिफायर्स, एयर कंडीशनर्स एवं माईक्रोवेव्स पर लागू होगा।

ओला शेयर्ड मोबिलिटी में सबसे आगे

उदयपुर। परिवहन के लिए भारत के सबसे बड़े मंच ओला ने अपनी सबसे तेज़ी से विकसित होती हुई कैटेगरीज़ में से एक ओला शेयर ने तीन नए शहरों में विस्तार की घोषणा की है। चण्डीगढ़, जयपुर और अहमदाबाद में विस्तार के साथ देश का सबसे बड़े शेयर्ड मोबिलिटी प्लेटफॉर्म अब भारत के 10 शहरों में मौजूद है।

उपभोक्ताओं एवं ड्राइवर साझेदारों को लाभान्वित करने के उद्देश्य के साथ कम्पनी द्वारा पेश किए गए अत्याधुनिक प्रोद्यौगिकी समाधानों के चलते यह कैटेगरी ज़बरदस्त कामयाब हुई है। ओला का सर्वश्रेष्ठ 'यूज़र मैचिंग एल्गोदिम' एक ही रास्ते पर जाने वाले उपयोगकर्ताओं के अधिकतम मिलान को सम्भव बनाता है, इसी तरह 'सेम रूट शेयरिंग' सुनिश्चित करता है कि ओला शेयर के उपयोगकर्ताओं को यात्रा के दौरान अपना रास्ता न बदलना पड़े क्योंकि एक ही कैब रास्ते में कई उपयोगकर्ताओं को पिक और ड्रॉप करती है। परिणामस्वरूप ओला शेयर के लिए प्रति किलोमीटर किराया अब अनुकूलित होकर मात्र 3 पर आ गया है।

ओला में सीएमओ और हैड ऑफ कैटेगरीज़ रघुवेश सरूप ने कहा कि शेयर्ड मोबिलिटी ओला के मुख्य क्षेत्रों में से एक है, जहां एक ओर यह सड़कों पर यातायात की समस्या के समाधान में योगदान देता है, वहीं दूसरी ओर प्रदूषण कम करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

ओयो ने शुरु किया सनराइज चेक-इन

उदयपुर । भारत के सबसे बड़े होटलों के नामी नेटवर्क ओयो ने बहुप्रतीक्षित समाधान पेश किया है जिसमें बुकिंग से 7 दिन पहले चेक-इन करना आश्वस्त किया जाता है। प्रत्येक होटल के अपने मनमाने चेक-इन समय (आम तौर पर दोपहर 12 बजे) होने और अतिथियों को परेशान और असहाय छोड़ दिए जाने से दुनिया भर के प्रचलित उद्योग के मानदंडों के लिए यह बड़ी बाधा थी।

यात्रियों को दक्ष, पूर्वानुमान करने योग्य और मानकीकृत रूप से ठहरने की सुविधा प्रदान करने के लिए ओयो द्वारा प्रस्तुत अग्रणी समाधानों की सूची में यह एक नई विशेषता है। यह सुविधा अनेक ओयो में निशुल्क रूप से और दूसरे होटलों में नाममात्र के शुल्क के साथ प्रदान की जा रही है। इस लांच से ओयो दुनिया का ऐसा पहला होटल ब्रांड बन गया है जो अपने अतिथियों को पहले चेक-इन करने की गारंटी देता है।

लांच के अवसर पर रीतेश अगरवाल, संस्थापक और सीवीओ, ओयो ने कहा कि आयो सनराइज चेक इन अब अपनी वेबसाइट और मोबाइल ऐप दोनों पर लाइव कर दिया गया है। ग्राहक ऐसे होटलों को आसानी से पहचान सकते हैं, चुन सकते हैं और बुक कर सकते हैं जो संपुष्ट चेक-इन की सुविधा प्रदान करते हैं। इसके अलावा, अतिथि अपनी मौजूदा बुकिंग को बदल भी सकते हैं और पहले चेक-इन सुरक्षित करा सकते हैं।

विचार, आचार.....

(पृष्ठ दो का शेष)

अपने व्याख्यानों में वे विविध विषयों का समावेश करते थे। कभी समतादर्शन का किसी रूप में जिक्र करते तो कभी समीक्षण ध्यान का और कभी दलितोद्धार के प्रसंग को विस्तार देते। कभी साधु जीवन में शिथिलाचार पर प्रहार करते तो कभी रूढ़ियों की घातक बुराइयों पर चोट करते। कभी धन की प्रतिष्ठा पर जीवनयापन करने वालों की खबर लेते तो कभी दहेज लोलुपों को लताड़ते। कभी मांसाहार के बढ़ते प्रयोग पर जैन समाज की चुप्पी तोड़ते तो कभी टीवी पर बार-बार अंडों के विज्ञापन के विरूद्ध समाज के कर्तव्यबोध को झकझोरते। कभी मृत्युभोज करने वालों को कोसते तो कभी आडम्बरपूर्ण जीवन जीने वालों को आड़े हाथ लेते। कभी धर्म के आडम्बर पर अपनी खीझ प्रगट करते तो कभी आत्महत्या करने वालों की नासमझी और मूर्खता का दिग्दर्शन कर बुराइयों, हिंसक प्रवृत्तियों, घृणित एवं निंदनीय कार्यों से बचने का उपदेश देते। ऐसा नहीं करने का त्याग कराते। सौगंध दिलाते तथा आजीवन सुव्रती बने रहने का प्रयास करते।

जीवन के महत्व को समझाते-समझाते एकबार आचार्यश्री ने अपनी धर्मसभा में बैठे सभी भाई-बहनों से कहा कि यदि वे अपने जीवन के महत्व को समझते हों तो अपने हाथ ऊंचे करें कि कभी भी आत्मघात याकि आत्महत्या नहीं करेंगे।

लेकिन सभी लोगों तक उनकी यह बात नहीं पहुंच पाई जिससे बहुत सारे हाथ नहीं उठ पाये तब आचार्यश्री ने जोर देकर कहा कि क्या आप अपने जीवन को खत्म करना चाहते हैं ? उन्होंने कहा कि जीवन की परिभाषा को ठीक करना है तो सबसे पहले जीवन को समाप्त नहीं करने का संकल्प लें। हमारे जीवन में कैसी ही अवस्था क्यों न आये हम उससे नहीं घबरायें और उसे नष्ट करने किंवा आत्महत्या करने का प्रयास नहीं करें।

अविस्मरणीय अनुभव :

मैंने आचार्यश्री नानेश के प्रथम दर्शन बीकानेर में सन् 1955 में किये थे तब उनका वर्षावास ठठेरा बाजार स्थित सेठियाजी की कोटड़ी में था। हम लोग इसी कोटड़ी के स्वामी अगरचंद भैरोदान सेठिया के बोर्डिंग में रहते थे। यह स्थल इस कोटड़ी के ठीक पास एक पतली गली से जुड़ा था। छोटीसादड़ी के गोदावत जैन गुरुकुल से हाईस्कूल की परीक्षा पास कर मैं बीकानेर आगे अध्ययन के लिए चला गया था। यहां पहले से मेरे अग्रज डॉ. नरेन्द्र भानावत अध्ययनरत थे।

कोटड़ी के सामने ही भैरोदानजी के सुपुत्र जेठमलजी का निवास था। भैरोदानजी रानी बाजार स्थित ऊन प्रेस में रहते। कभीकभाक हम सभी उनके दर्शनार्थ जाते। उन जैसा संत पुरूष मैंने अपने जीवन में अन्य नहीं देखा। यों पूरा सेठिया परिवार ही संत-भक्त श्रेष्ठ आदर्श परिवार रहा। इस परिवार ने हमें उच्चशिक्षा ही सुलभ नहीं कराई, गृहस्थ जीवन-यापन के सुसंस्कार भी दिये। बीकानेर छोड़ने पर भी साधुमार्गी जैन संघ से भाई साहब का सम्बंध अंत तक प्रगाढ़ रहा। संघ से प्रकाशित 'श्रमणोपासक' नामक मुख पत्र का उन्होंने वर्षों तक संपादन करने के साथ-साथ कई महत्वपूर्ण संगोष्ठियों तथा आयोजनों में मुख्य भूमिका निभाई। साधुमार्गी जैन संघ ने भी समय-समय पर उनका यथोचित सम्मान किया। जीवन के अंतिम पड़ाव में भी एक विशाल धर्मसभा का आयोजन कर संघ द्वारा उन्हें 26 जून 1993 को पच्चीस हजार रुपयों की थैली भेंटकर श्रेष्ठतम 'अक्षर प्रज्ञ' सम्मान प्रदान किया गया।

साधुमार्गी जैन संघ से अलग हुए ज्ञानमुनि ने अरिहंत मार्गी जैन संघ की स्थापना की और उसके आचार्य बने। इसी प्रकार शांतिमुनि और विजयमुनि ने श्री अखिल भारतवर्षीय शांत क्रांति जैन संघ की स्थापना कर विजयमुनि को आचार्य पदासीन किया। आचार्य नानेश के उत्तराधिकारी आचार्य रामेश बनाये गये जो धर्मसंघ का गौरव बढ़ा रहे हैं।

चातुर्मास काल में प्रतिदिन ही हमें संत-दर्शन एवं व्याख्यान-श्रवण का सौभाग्य मिलता रहा। तब आचार्य गणेशीलालजी महाराज के सान्निध्य में रह रहे साथ नानालालजी महाराज (नानेशाचार्य) से भी अच्छा संपर्क होना स्वाभाविक था। उन्हीं दिनों धाय महाराज इंद्रचंद्रजी से भी हमारा अच्छा संपर्क बना जो आगे जाकर आत्मीयता की गहराई को छू सका।

सन् 1958 में बीकानेर की अपनी पढ़ाई पूरी कर मैं उदयपुर आ गया और यहीं स्थायी रूप से बस गया। यहां सन् 1959 से लेकर 1962 तक आचार्य गणेशीलालजी महाराज (गणेशाचार्य) बिराजे तब उनके दर्शन के साथ-साथ नानालालजी महाराज के दर्शनों से उनके नजदीक आने और जीवन जगत् को जानने-समझने के कई अवसर हाथ लगे। सन् 1981 में आचार्य के रूप में जब पहली बार उदयपुर में नानेशाचार्य चातुर्मास हुआ तब भी कई बार नजदीक से उनके दर्शनों का सुयोग बना।

कानोड़ चातुर्मास :

सन् 1989 में अपने गांव कानोड़ में आचार्य नानेश का चातुर्मास हुआ जो कई दृष्टियों से अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। अपने आचार्य और धर्मसंघ के प्रति अटूट श्रद्धा, अचूक निष्ठा और सर्वस्व समर्पण, अनुनय विनय, श्रद्धालुओं के प्रति आत्मीयता का जुड़ाव एवं मेवाड़ी मनुहार का मोहक दरसाव, दूर-सुदूर के श्रेष्ठिजनों तथा समाज-शिरोमणियों की उपस्थिति, धार्मिक प्रवृत्तियों के मंगलाचरण, विद्वत् गोष्ठी में वैचारिक मंथन ; कुछ इस तरह का समा बांध गया कि शिक्षा नगरी का यह चातुर्मास न केवल कानोड़ के लिए अपितु धर्मसंघ के इतिहास और आचार्य कुल के चातुर्मासों में भी अविस्मरणीय बन गया।

वहीं मैंने देखा आचार्यश्री की चरण-रज को उनके श्रद्धालु भक्त इस जतन से सहेजते रहे जैसे कोई अपने लोकदेवता द्वारा काज सिद्धि और आरोग्य सिद्धि के लिए दिये गये फूल-पाती अथवा आखा-भभूत की तरह सहेज कर पुड़िया अथवा गांठ बंधी कर रहे हैं। बचपन का कक्षा-पाठी सवाई तो इस रज को पाकर सवाया ही हो गया था। बता रहा था कि पूरे चातुर्मास के दौरान एक पोटली चरण रज प्राप्ति की थी जिसे अपने झाड़-फूंक के दौरान और रोगियों को ठीक करने के काम में लेता था। कहां-कहां नहीं पहुंची होगी वह रज ! न जाने कौन-कौन सी, कितनी बीमारियों का क्षरण-हरण हुआ होगा उससे ! सुना कि इस रज से कई रजतवान बन गये। असाध्य बीमारियों को झेलते कई बूढ़े-बूढ़ी हल्के हो गये। कठिन दौर का जरा-ग्रस्त जीवन जीने वाले रज क्या पा गये जैसे चिंतामणि पा गये। सुदामा सुदामवाले और अल्प वृक्ष के सहारे जीने वाले कल्पवृक्ष के करतार हो गये। उन्होंने रज के दर्शन में नाना गुरु का विशाल जीवन वैभव और अध्यात्म का आलोकपुंज देखा। सच तो यह है कि लोक ने उनमें अपना संत देखा और आचार्य नानेश ने उस लोक को साधुत्व से भर दिया। इस साधुत्व का जिसने भी छींटा पाया वह धन्य हो गया।

अपने भक्तों के भगवान, जन-जन की आस्था के केन्द्र आचार्यश्री नानेश भगवान महावीर की पाट-परंपरा के ऐसे अनोखे सिद्ध पुरूष थे जिनमें अपने पूर्ववर्ती आचार्यों के सभी दिव्यगुण अपनी संपूर्ण गरिमा में विद्यमान थे। ऐसे संत किसी एक वर्ग, किसी एक संप्रदाय और किसी एक युग के न होकर युगों-युगों की मानवता की विरासत होते हैं और अपनी उपस्थिति से लोक को धन्य कर जाते हैं।

शिक्षक को शिक्षक ही रहने दें

-प्रो. शूरवीर सिंह भाणावत-

भारत में शिक्षा की गुणवत्ता में गिरावट का मुख्य कारण शिक्षक का शिक्षक नहीं रहना। मेरी राय में शिक्षक का मूल कर्त्तव्य अध्ययन-अध्यापन, अनुसंधान एवं अपने विषय से संबंधित राष्ट्रीय, सामाजिक, राजनीति आदि समस्याओं पर अपनी बेबाक राय प्रस्तुत करना होना चाहिए। आज शिक्षक में से शिक्षकत्व समाप्त होता जा रहा है। मेरी दृष्टि में इसके लिए दो कारण जिम्मेदार हैं। प्रथम सरकार की नीतियाँ एवं द्वितीय स्वयं शिक्षक।

आज सरकार की नीतियों के कारण शिक्षक को वो कार्य करने पड़ते हैं जो उसके मूल कर्त्तव्य से मेल नहीं खाते हैं। प्राथमिक शिक्षा के शिक्षकों को जनगणना, चुनाव, सरकारी योजनाओं को क्रियान्वयन आदि में लगाया जाता है जो उनके आत्मसम्मान पर कुठाराघात है और वह शिक्षण कार्य से दूर होता जाता है। विश्वविद्यालयों में अनेक प्रशासनिक पदों पर जैसे कुलपति, डीन, विभागाध्यक्ष, परीक्षा नियंत्रक, छात्र कल्याण अधिष्ठाता आदि प्रोफेसरों की नियुक्ति की जाती है। परिणामस्वरुप उनके शैक्षणिक ज्ञान में उत्तरोत्तर ह्रास होता जाता है। अध्ययन-अध्यापन एवं अनुसंधान में दूरियाँ बढ़ती जाती है और शनैःशनैः शिक्षाविद् राजनीतिज्ञ गठजोड़ के समीकरणों में उलझा रहता है और शिक्षक का शिक्षकत्व समाप्त होने के कगार पर पहुंच जाता है।

शिक्षक का शिक्षकत्व समाप्त होने में स्वयं शिक्षक भी जिम्मेदार है। कई प्राध्यापक राजनीति में प्रवेश कर जाते हैं। परिणामस्वरुप उनका शिक्षकत्व संकट में आ जाता है। राजकीय विश्वविद्यालय राजनीति के केन्द्र बिन्दु बन गए हैं। उच्च पदों पर नियुक्तियां भी राजनीति प्रेरित होती हैं। कई प्राध्यापक विद्यार्थी राजनीति में समाहित हो जाते हैं। परिणामस्वरुप विश्वविद्यालयों का हित व्यक्तिगत हितों के पार्श्व में चला जाता है। प्राध्यापकों में वो स्वाभिमान एवं शिक्षा के प्रति समर्पण के भाव नजर नहीं आते जो पुरानी पीढ़ी के शिक्षकों में पाए जाते थे। स्वयं की श्रेष्ठता का भाव मौका पाते ही विराट रुप ले लेता है।

सरकार को चाहिये की प्राध्यापकों के सक्रिय राजनीति में जाने पर पाबन्दी लगाए। प्रशासनिक पदों पर प्रशासनिक अधिकारी आइ.ए.एस एवं आर.ए.एस स्तर के होने चाहिए। शिक्षक को केवल अध्ययन, अध्यापन, अनुसंधान एवं सलाह की कार्यप्रणाली तक सीमित कर देना राष्ट्रीय एवं सामाजिक मुद्दों पर अनुसंधान के लिए प्रेरित करना चाहिए। अनुसंधान के क्षेत्र में भी सरकार की विषमतापूर्ण नीति नजर आती है। राजकीय एवं राज्य विश्वविद्यालयों की तुलना में आई आई टी, आई आई एम एवं केन्द्रीय विश्वविद्यालयों को ज्यादा अनुदान दिया जाता है।

भारत में प्रति दस लाख लोगों पर 110 अनुसंधानकर्ता है वही चीन में 633 एवं जापान में 5000 है। विश्व के कुल अनुसंधान पत्रों में भारत की हिस्सेदारी सिर्फ 2.5 प्रतिशत है जबकि अमेरिका का हिस्सा 32 प्रतिशत है। हमारे शिक्षक वर्ग को भी अनुसंधान के लिए प्रेरित करना होगा। इसके लिए सरकार को उच्च शिक्षा में आधारभूत विनियोग करना होगा।

1964 में कोठारी कमीशन ने सुझाव दिया था कि सरकार को अपनी जी.डी.पी की कम से कम 6 प्रतिशत राशि शिक्षा पर खर्च करनी चाहिए किन्तु आज तक सरकार जी.डी.पी के 3 प्रतिशत से अधिक खर्च नहीं कर पाई। विद्यार्थी-शिक्षक अनुपात भी खतरनाक स्थिति पर पहुंच गया है। जिसे सरकार को नए प्राध्यापकों की नियुक्ति के साथ सुधारना होगा।

विश्वविद्यालयों में नियुक्ति वैश्विक आधार पर होनी चाहिए। विश्वविद्यालय का नाम तभी सार्थक होगा जब सभी जाति, धर्म, संस्कृति, भाषा, क्षेत्र के प्राध्यापकों की नियुक्ति संघ लोकसेवा आयोग के माध्यम से होगी। शिक्षकों को यह समझना होगा कि उनका अस्तित्व तभी है जब वे अध्ययन-अध्यापन से जुड़े रहें।

डीएचएल एक्सप्रेस द्वारा रेट ऐडजस्टमेंट्स की घोषणा

उदयपुर। डीएचएल एक्सप्रेस, विश्व ने अपने वार्षिक सामान्य औसत मूल्य वृद्धि की घोषणा की। यह बढ़ोतरी एक जनवरी 2017 से प्रभावी होगी। भारत में औसत मूल्य वृद्धि 6.9 प्रतिशत होगी। डीएचएल एक्सप्रेस के सीईओ केन एलेन ने कहा कि डीएचएल एक्सप्रेस का ध्यान अंतर्राष्ट्रीय समय निर्धारित डिलीवरी व्यवसाय में क्वालिटी लीडर बनने पर केंद्रित है। हमारी वार्षिक मूल्यवृद्धि हमें सही मायनों में विश्वस्तरीय नेटवर्क में निवेश करने का अवसर देकर इस आकांक्षा को समर्थन प्रदान करती है, जिससे हमारे ग्राहकों के लिए उल्लेखनीय मूल्य का सृजन होता है। हमारी कीमतें हमारी सेवा में मूल्यवर्धन एवं सेवा गुणवत्ता में हमारी गैर-समझौतावादी दीर्घ-कालिक प्रतिबद्धता दोनों को ही प्रतिबिंबित करती हैं। वर्ष 2016 में हमने अपने नेटवर्क, प्रणालियों एवं लोगों में व्यापक निवेश की घोषणा की थी, और 800 मिलियन यूरो का उपयोग पूंजीगत खर्च में किया गया। इस संदर्भ में टोक्यो, जापान में गेटवे, सिनसिनाटी, यूएसए, सिंगापुर व लेपजिग, जर्मनी के हमारे हब में नए ऑटोमेटेड सॉर्ट्स के लॉन्च एवं हमारे यूरोपियन एयर फ्लीट में अधिक सक्षम ए 330-300 कारगो एयरक्राफ्ट के समावेश पर किया गया निवेश उल्लेखनीय है, जो 66 मिलियन यूरो रहा। वर्ष 2017 में हम निवेश की इस दर को बरकरार रखेंगे और अपने नेटवर्क को बढ़ाना जारी रखेंगे।

डीएचएल एक्सप्रेस इंडिया के एसवीपी व कंट्री मैनेजर आर. एस. सुब्रमण्यिम ने कहा कि डीएचएल ने अपने ग्राहकों को बेहतर डिलीवरी स्पीड, सक्षमता एवं उत्कृष्ट सेवा गुणवत्ता उपलब्ध कराने के लिए भारत एवं अपने वैश्विक नेटवर्क में निवेश करना जारी रखा है।

एयरटेल द्वारा 20,000 ई-केवाईसी सॉल्यूशन पेश

उदयपुर। भारती एयरटेल ने पूरे भारत में 20,000 से अधिक आधार आधारित ई-केवाईसी सॉल्यूशन सफलतापूर्वक पेश किए हैं। दूरसंचार विभाग, भारत सरकार द्वारा जारी अधिसूचना के बाद एयरटेल आधार आधारित ई-केवाईसी सॉल्यूशन की पेशकश करने में अग्रणी भूमिका निभा रही है।

भारती एयरटेल के भारत एवं दक्षिण एशिया के निदेशक-ऑपरेशंस अजय पुरी ने कहा कि इस पहल को ग्राहकों की ओर से सकारात्मक प्रतिक्रिया मिल रही है क्योंकि इससे एयरटेल मोबाइल सिम को तत्काल एक्टिव करने की सुविधा मिल रही है। इससे ग्राहकों की सुविधा और इन-स्टोर अनुभव को बेहतर बनाने में मदद मिली है। डिजिटल सत्यापन जो कि पूरी तरह सुरक्षित है, इससे कागजी काम खत्म हो गया और पर्यावरण को लाभ हुआ है। 50,000 से अधिक ग्राहकों जिनमें ग्रामीण भारत भी शामिल हैं, हर रोज एयरटेल से इस डिजिटल सॉल्यूशन का इस्तेमाल कर जुड़ रहे हैं। कंपनी को उम्मीद है कि आधार आधारित ई-केवाईसी का इस्तेमाल कर डिजिटल तौर पर एयरटेल से जुड़ने वाले ग्राहकों की संख्या कई गुना बढ़ने की उम्मीद है क्योंकि इससे डिवाइसों की पेशकश पर असर पड़ेगा। पहले चरण को लागू करने में एयरटेल की योजना अगले कुछ महीनों में 5,00,000 से अधिक रिटेल आउटलेट में सॉल्यूशन पेश करने की है, खास तौर पर ग्रामीण इलाकों के रिटेल आउटलेट में।

नवरात्रा में शक्तियों .....

(पृष्ठ एक का शेष)

आदिवासियों में पुरूष-पूरवज को 'सीरा' जबकि महिला-पूरवज को 'मातलोक' कहते हैं। ये गृह देव भूत-प्रेत, डायन-चूड़ैल तथा अन्यान्य संकटों से घर-परिवार की रक्षा करते हैं। इनकी मृत्यु-तिथि पर धूप-ध्यान तथा पूजा का विधान है। पुत्र-जन्म तथा विवाह पर इन्हें रात्रि जागरण दिया जाता है। श्राद्धपक्ष में मृत्यु तिथि पर छोटे-बड़े प्रत्येक पूरवज को मिष्ठान्न-धूप दी जाती है। यह धूप कितनी पीढ़ी तक लगती है, इस बारे में मैं अनेक वर्षों से अनेक लोगों से पूछताछ करता रहा। अंत में तीजादेवी यादव ने बताया कि चार पीढ़ी तक के पड़दादा-दादी पूर्वजों को धूप लगती है। मैं समझ गया कि सोने की सीढ़ी चढ़ने वाला भी पड़दादा ही होता है।

प्राय: सभी लोकदेवी-देवता तथा पूरवज किसी के शरीर में प्रकट होकर सवाल-जवाब करते हैं। पूछी हुई बात का उत्तर देते हैं। रोग, शोक, दुख, चिंता तथा हर प्रकार की शंका का निवारण करते हैं। किसी के शरीर में देवता के वास वाले व्यक्ति को 'भोपा' कहते हैं परन्तु घर के पूरवज घर के ही किसी महिला-पुरूष के शरीर में भाव-रूप में आते हैं। वे उनके 'घोड़ले' होते हैं। देवी-देवताओं के भोपे पुरूष होते हैं। कहीं-कहीं लालांफूलां के भोपे को मैंने भाव लाते समय औरत वेश में देखा। इन देवी-देवताओं के स्थान-देवरे पर साप्ताहिक चौकी लगती है जहां आकर व्यक्ति समस्याओं का समाधान पाता है और मनोरथ पूरा करने की साध लेता है। मनौती बोलता है। भेंट-भेंटावण चढ़ाता है। ये देवी-देवता जात-पांत के बंधनों से मुक्त होते हैं परन्तु चूंकि इनके देवरे प्राय: प्रत्येक गांव में होते हैं अत: ये ग्राम देवता के रूप में अपने गांव, जाति तक विशेष रूप से सीमित भी होते हैं।

नवरात्रा में विशेष मानता :

शक्ति और शौर्य के प्रतीक इन देवी-देवताओं की नवरात्रा में नौ ही दिन विशेष सेवा-पूजा होती है। यह नवरात्रा वर्ष में दो बार आती है। शारदीय नवरात्रा आश्विन शुक्ला प्रतिपदा से तथा वासंतिक नवरात्रा चैत्र शुक्ला प्रतिपदा से प्रारंभ होती है। इनमें शारदीय नवरात्रा अधिक महत्वपूर्ण मानी जाती है। नवरात्रा के नौ ही दिनों देवरे में अखंड दीपक जलता है। भोपा इन दिनों देवरे में ही रहता, सोता तथा पूर्ण संयमी जीवन जीता है। इन दिनों अधिकाधिक समय भोपे में देव का वास बना रहता है। भक्तगण भजन, गीत, गाथाएं गाते रहते हैं। सेवा-पूजा धूप-बत्ती चलती रहती है। कई मनौतियां वाले भी और अन्य बीमार व्यक्ति भी खासतौर से इन्हीं दिनों अधिक दर्शनार्थ आते हैं।

इन दिनों प्रत्येक देवस्थल-देवरे को लींपाई-पुताई कर अच्छा बनाया जाता है। दीवारों पर चितराम मांडे जाते हैं। देवी-देवताओं को भी नया परिवेश दिया जाता है। उनके सिंदूर मालीपन्ना चढ़ाई जाती है। नई पोशाक धारण कराई जाती है। भोपा प्रतिदिन सुबह-शाम स्नान-ध्यान, सेवा-पूजा करता है। इस अवसर पर ढोल, थाली, नगाड़ा, शंख बजाया जाता है। पूजा पूरी होते ही अचानक भोपा कंपकंपी खाने लगता है। वह अपने हाथ में मोरपंख लेता है। कभी सांकल पीठ पर मारता है। सिर को जोर-जोर से धुनता है। हाक, किलकारी मारता है। इसके पश्चात देवता के सम्मुख अपने आसन पर आ बैठता है। कुछ भोपे जब तक न्याय करते रहेंगे तब तक उनमें भाव-रूप शक्ति का अवतरण बना रहेगा। कुछ भोपों में कंपन आसन पर बैठते ही बंद हो जाती है। कुछ भोपे ऐसे भी देखे गये जिनमें कंपन होती ही नहीं। ज्योंही वे अपने आसन पर बैठते हैं कि उनमें शक्ति का संचरण हो आता है।

आशीषपरक आखे :

जितने भी जातरी देवरे में आते हैं वे सब अपने साथ मकई अथवा गेहूं की पोटली (मुट्ठी) अवश्य लाते हैं। एक-एक कर भोपा सबको बुलाता है और उनके दर्दों दुखों को सुनकर उनके सिर पर झाड़ू फटकार कर भभूत रूप में कंडे की धूप-बूझी राख तथा आखे-अक्षत यानी गेहूं-मकई के कणादि देकर उनका काम पूर्ण होने का आशीष देता है। आखे एकी की संख्या अर्थात् पांच, सात, नौ, ग्यारह के ही शुभ माने जाते हैं। इस संख्या वाले आखे 'मोती' कहलाते हैं। छह की संख्या वाले आखे 'जोड़' तथा आठ की संख्या वाले आखे ठीक नहीं समझे जाते हैं। मोती आखे के साथ यदि अल्या अर्थात् कचरा-कंकड़ आ जाता है तो यह समझ लिया जाता है कि मन में संकल्पित काम तो होगा पर उसमें कुछ बाधा आयेगी। भोपे को प्रत्येक व्यक्ति को आखे देने होते हैं। मोती आखे जब तक नहीं आते तब तक वह दूसरे आखे देता रहता है।

नवरात्रा में प्रतिदिन इन देवी-देवताओं के संबंध में इनकी शौर्यपरक गाथाएं गाई जाती है। ये गाथाएं 'भारत' कहलाती हैं। इसके साथ ढाक नामक वाद्य बजाया जाता है। यह ढाक डमरू के आकार की होती है जिसकी रस्सी बांये पांव के घुटने में डाल दी जाती है। घुटने के सहारे अंगुलियों पर टिकी यह ढाक दांये हाथ में रखी कमड़ी से तथा बांये हाथ की थाप से बजाई जाती है। ढाक ज्यों-ज्यों तेज होती जाती है त्यों-त्यों भारत की गायकी जोर पकड़ती जाती है और ज्यों-ज्यों भारत ऊं चाई की ओर पहुंचता है त्यों-त्यों वहां बैठे श्रोता-गायकों में से गाये जाने वाले भारत से संबंधित भोपे में शक्ति का अवतरण हो उठता है। भारत गायकी की सबसे बड़ी सफलता भी यही समझी जाती है। कहावत भी है-'गोड़ा में ढाक गमतीज नजर आवे, डाकण्यां रमतीज नजर आवे।' ढाक का इतना महत्व होने के कारण इन्हें 'ढाक भारत' भी कहते हैं। इनके साथ थाली भी बजाई जाती है। भारत का एक नाम 'वीर' भी है। इन्हें कहीं-कहीं 'माताजी के गीत' भी कहते हैं।

भारत गान के चमत्कार :

देव भारत में रेबारी, भेरूनाथ, राड़ा, रामदेव, केशरिया, वासक, रांगड्या, देवनारायण, ताखा, राईका, भूणा, मेंदू, मामादेव, ओगड़, नाथू, हडुमान, डेरावीर, भूत, गलालैंग तथा देवी भारत में चावण्डा, लालांफूलां, कालका, अंबाव, रूपण, मासीमां, लटकाली, मेलड़ी, शिकोतरी, चौथ, काछा, डाकणी, पीपलाज मुख्य है। इनके अतिरिक्त वेलावाणिया, चोर चपल्या मीणा, भारत बीड़ा, पूरवज, हठिया, बड़ल्या, माताजी थापना के भारत भी गाये जाते हैं। ये भारत अधूरे नहीं गाये जाते। अधूरा भारत गाने में दोष लगता है। पूरे भारत को 'घर-आसमान का भारत' तथा अधूरे भारत को 'उबदू' कहते हैं।

यदि कोई स्त्री मरकर घरवालों को परेशान करने लगे तो उसका शिकोतरा रखा जाता है। तब लाल कपड़े में नारियल लपेट, चूंदड़ ओढ़ा घर के आलिये में रख दिया जाता है। जब मृतका के पति की मृत्यु हो जाती है तब वह नारियल उसकी चिता के साथ जला दिया जाता है। यह शिकोतरा कहीं-कहीं शिकोतरी के नाम से भी पूजा जाता है। शिकोतरी एलम जानने वाले को ही आती है। माताजी, भेरूजी के भोपों को शिकोतरी नहीं चढ़ती।

जहां अन्य देवी-देवताओं के भोपों को गोळ, बींटी-अंगूठी धारण करना आवश्यक है वहां शिकोतरी के भोपे के लिए यह आवश्यक नहीं है। शिकोतरी का वाहन मुर्गा है। इसका भोपा शराब तथा रक्त का प्याला पीता है।

मेलड़ी काले मींडे की सवारी करती है। ओगड़ का खान-पान टट्टी-पेशाब है। यह शराब भी पीता है। इसके केसर की छांट दी जाती है। मिट्टी की बनी मूर्तियों पर सिंदूर चढ़ाया जाता है। पत्थर की मूर्तियों पर सिंदूर नहीं चढ़ा कर तेल चढ़ाया जाता है। रेबारी का मुख्य निशान गेड़िया, कालका का त्रिशूल, चगोतरी का केंकेड़ा, भेरूजी का गुरज, ओगड़ का चींपिया है। मोरपंख, सांकल प्राय: सभी दवी-देवताओं को प्रिय है।

भारत गाने के दौरान मैंने कई बार भोपों के शरीर में देवों का वास आते देखा है। रांगड्या के भारत के दौरान जब भारत गाथा खूब तेजी पर थी कि अचानक मेरे पास बैठा एक व्यक्ति जमीन से दो फुट की ऊंचाई छलांग बैठा। मैंने ऐसी जोर की हाक और उछलाहट कभी देखी-सुनी नहीं थी इसलिए मेरा भयभीत होना स्वाभाविक था। वह ज्योंही उछला कि पास बैठे चार व्यक्तियों ने उसे कठ्ठा पकड़ लिया। तब भी वह उन चारों को हिलाये रहा। उस अरनिया गांव में केवल मैं ही ऐसा व्यक्ति था जो उस दृश्य से डरा-थमा जा रहा था, शेष सभी छोटे-बड़ों पर उसका असर नहीं था अपितु कुछ लोग तो गालियों की भाषा में उससे सवाल कर रहे थे। कुछ देर बाद उसे तम्बाकू से ठांडी चिलम दी गई। वह कंपितावस्था में ही चिलम का धुंआ छोड़ता रहा और अंत में अपनी सामान्य स्थिति में आ गया। बाद में पता चला कि दला खारोल नामक वह जवान रांगड्या का भोपा था इसीलिए उसके नाम का भारत गाते ही वह कंपित हो उठा।

एक और मासीमां के भारत में भी मैंने इससे भी अजीब दृश्य देखा। तब एक साथ दो व्यक्ति चीख उठे और छलांगें मारते उस पूरे समुदाय के बीच चक्कर काटते रहे। ऐसे वातावरण में यदि कोई अजनबी हो और थोड़ा भावुक हो तो वह बेहोश ही हो जाय। मैं तब तक ऐसे वातावरण से अभ्यस्त हो चुका था नहीं तो मेरी स्थिति क्या होती उसका मैंने सहज ही अनुमान लगा लिया था। ये दोनों व्यक्ति मासीमां के भोपे थे इसलिए ज्योंही मासीमां का भारत अपनी चरम सीमा पर आया कि ये फफक पड़े।

4 अप्रेल 1975 को हमने कलामंडल के स्टूडियो में कुछ भारत रेकार्डिंग का कार्यक्रम रखा। रात दस बजे से सुबह चार बजे तक हमने इस दिन भारत रेकार्डिंग किये परन्तु बीच में रेकार्डिंग के दौरान बड़ी विचित्र घटना घटी जिसका उल्लेख मैं यहां आवश्यक समझ रहा हूं।

चौथमाता का भारत जब रेकार्डिंग किया जा रहा था कि अचानक शोभालाल नामक व्यक्ति अपना एक हाथ जमीन पर टेककर दूसरे हाथ से पूरा शरीर कंपाते, बीड़ी पीते, एक आंख के हल्की-हल्की चोट देते भारत गाता रहा। इसी समय बड़ी खूबी में उसने पूरे स्टूडियो की चकरी ली और सबका ध्यान चुराते हुए भेरा से थाली छीनकर फैंक दी। इतने में भजा में रेबारी प्रवेश हो आया। उसने चोरी नहीं करने दी। इधर लालजी भोपे ने अपनी कमीज उतारी और चगोतरी (शिकोतरी) को कुछ मंत्रों के साथ बुलाया कि चौथ माता भागती बनी। भागते-भागते वह सबके पांव पड़ी। इधर रेबारी ने बीच में पानी पिया और ढाक बजाना बंद कर दिया। इससे लगता है कि इन देवी-देवता के बीच में भी कई तरह की श्रेणियां हैं जो एक-दूसरे से बड़े-छोटे और अपनी-अपनी मर्यादा-सीमा लिए हैं। उस दिन का वह दृश्य आज भी मेरे मन पर अमिट छाया हुआ है।

भारत-अध्ययन :

भारत का मेरा यह अध्ययन मेवाड़ क्षेत्र का अधिक है। ये भारत सभी जातियों में समूहबद्ध गाये-बजाये जाते हैं। मेरी अध्ययन यात्रा में वरदा हमावत (13.10.69), गोरदा भील (ऊसरवास 14.10.69), परताब, हीरा, चैना कालबेलिया (कूंटवा 15.10.69), कसना मेघवाल, मन्ना मीणा, भजा रावत (अरनिया 11.10.67), लखमा रावत (पालोद 12.10.67), लालू सालवी, लोगर्या गमेती, नंगा सालवी, जेत्या गमेती (उदयपुर), नगजी (झाड़ोल-जयसमंद 4.4.74) तथा उनके गांवों के अन्य गायकों को सुनने तथा पूछताछ करने का विशेष योग रहा है।

भारत का मेरा यह अध्ययनन आज भी जारी है। गवरी खेल में विविध स्वांगों के साथ गाई जाने वाली गाथा 'भारत' ही कहलाती है। सन् 1973 में बीकानेर की डॉ. सुशीला गुप्ता ने राजस्थानी लोक महाभारत विषय पर डॉ. नरेन्द्र भानावत के निर्देशन में राजस्थान विवि से पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त की। दो विशाल खंडों में उनका यह अध्ययन अप्रकाशित है। भारत विषयक मेरी पुस्तकें- 'काला गोरा रो भारत', 'लोकनाट्य गवरी', 'ताखा अंबाव रो भारत', 'देवनारायण रो भारत', 'पांडवों का भारत' प्रकाशित हैं।

कैपिटलवाया द्वारा इन्वेस्टर एजुकेशन मीट आयोजित

उदयपुर। देश की सबसे बड़ी प्योर प्ले फाइनेन्शियल मार्केट रिसर्च एवं कन्सल्टिंग कम्पनी कैपिटलवाया ग्लोबल रिसर्च लि. ने उदयपुर में इन्वेस्टर एजुकेशन प्रोग्राम का आयोजन किया। इसका मुख्य उद्देश्य कारोबारियों को पेशेवर कारोबार के बारे में जानकारी देना था।

इस मौके पर आयोजित प्रेसवार्ता में कैपिटलवाया ग्लोबल रिसर्च के मार्केटिंग हैड सौरभ माथुर ने कहा कि कई गुना पैसा कमाने का विचार बेहद आकर्षक लगता है, लेकिन बेहद संवेदनशील स्टॉक के साथ ट्रेडिंग करना उतना ही जोखिमभरा भी होता है। पिछले सालों के दौरान शेयर बाज़ार में एक ही दिन में कई प्रतिष्ठित शेयरों में भारी उतार-चढ़ाव देखे गए हैं फिर भी ट्रेडर्स की एक बड़ी संख्या इस पर दांव लगाना पसंद करती है लेकिन बिना कोई योजना बनाए या मौजूदा जोखिम को पहचाने बिना ही वे इसमें पैसा लगा देते हैं, जिसके बुरे परिणाम हो सकते हैं। उदयपुर में इन्वेस्टर एजुकेशन मीट के माध्यम से कैपिटलवाया सभी ट्रेडर्स को नियमित रूप से प्रशिक्षण प्रदान करना चाहती है। इससे पहले भी हम देशभर में 2000 से ज़्यादा कारोबारियों को शिक्षित कर चुके हैं। उपभोक्ताओं ने कैपिटलवाया द्वारा आयोजित इस सत्र को बेहद पसंद किया, उन्हें ट्रेडिंग की विभिन्न प्रथाओं के बारे में जानने का मौका मिला, साथ ही अपने सवालों के समाधान भी प्राप्त हुए।

पियर्स ब्रॉसनन एफएमसीजी ब्रांड के कैम्पेन में

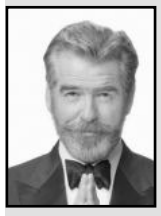

उदयपुर। मिस्टर बॉन्ड के रूप में लोकप्रिय अभिनेता पियर्स ब्रॉसनन एक अग्रणी भारतीय एफएमसीजी ब्रांड के कैम्पेन में नजर आयेंगे। यह उनका अब तक का सबसे बड़ा कैम्पेन होगा। अभी तक बॉलीवुड से सफलतम सितारों को लेने के बाद, यह ब्रांड अपने उत्पाद के प्रचार के लिए मि. ब्रॉसनन को लाकर बेहद रोमांचित है। एक क्लास के प्रतीक एवं सफलता के आइकन होने के नाते, वे भारत के एक सबसे पसंदीदा कॉन्डिमेंट ब्रांड में गतिशीलता का समावेश करेंगे। इस ब्रांड ने अपनी श्रेणी की स्थापना की और प्रतिस्पर्धी बाजार में कलाकारों से भरपूर विज्ञापनों एवं ग्लैमरस सहयोग के जरिये अपनी अलग जगह बरकरार रखी है। ऐसा दूसरी बार है जब पियर्स किसी भारतीय ब्रांड से जुड़ेंगे। पिछली बार उन्हें सूटिंग ब्रांड का प्रचार करते हुये देखा गया था। हॉलीवुड द्वारा भारतीय ब्रांडों का विज्ञापन करना एक दुर्लभ घटना है।

'काव्योदय-2016' में देर रात तक जमे रहे श्रोता

गंगा जमनी तहजीब ने श्रोताओं को खूब लुभाया

मुनव्वर राणा

उदयपुर। लोककला मण्डल के मुक्ताकाशी मंच पर आयोजित हुए अखिल भारतीय विराट कवि सम्मेलन में कवियों ने अपनी कविताओं से श्रोताओं

रासबिहारी गौड़

को हंसाया, रूलाया और झकझोर दिया। विशाल जन समुदाय कवियों की प्रस्तुतियों को दत्तचित्त होकर कानों के

विष्णु सक्सेना

रास्ते दिल में उतार कर काव्य रस में खो गया। श्रोताओं से खचाखच भरे लोककला मण्डल में नीरव शांति और तालियों की गड़गड़ाहट ने प्रस्तुतियों को

आलोक पगारिया

मूल्यवान और असरदार बना दिया।

अपनी वीरोचित स्वभाव के अनुसार

लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ का अभिनंदन करते अल्पेश लोढ़ा एवं डॉ. तुक्तक भानावत

कोलकाता से आए प्रख्यात शायर मुनव्वर राणा ने ले अंधेरे तेरा मुंह काला हो गया, मां ने आंखे खोल दी उजाला हो गया....., नये कमरे में अब चीज पुरानी कौन रखता है, परिन्दों के लिए कुण्डों में पानी कौन रखता है, हमीं थामे हुए गिरती हुई दीवार को वरना, सलीके से बुजुर्गों की निशानी कौन रखता है.... पंक्तियां सुनाई तो जनता ने तालिया बजाकर हिन्दुस्तान के हस्ताक्षर राणा को आंखों पर उठा लिया। उन्होंने कोई सरहद नहीं होती, कोई गलियारा नहीं होता, मां बीच में होती, तो बंटवारा नहीं होता... शेर प्रस्तुत कर हुकूमत के मसलों पर चोट की।

इस अवसर पर अल्पेश लोढ़ा, नदीम खान, डॉ. तुक्तक भानावत, रंजना भानावत, प्रमोद सामर, मुकेश हिंगड़, नेमी जैन, संदीप सिंघटवाड़िया, मनीष गन्ना ने कवियों का पगड़ी व शॉल द्वारा स्वागत किया। कार्यक्रम का आरंभिक संचालन आलोक पगारिया ने किया।

मंच संचालक और कवि प्रकाश नागौरी ने हिन्दुस्तान के जांबाजों का नहीं कोई सानी है, सर कट जाये तो धड़ लड़ले ऐसे हम बलिदानी हैं, तू और तेरे आतंकी बस और तेरे कोई साथ नहीं, तू हम पर हमला कर दे ये पाक तेरी औकात नहीं....। अगर सैनिकों को दिल्ली से, ठोस इशारा मिल जाता, हाफीज सईद क्या पूरा पाकिस्तान नींव से हिल जाता..... की प्रस्तुति से माहौल को जोशीला कर दिया।

ख्यातनाम गीतकार और श्रृंगार के विशिष्ट कवि विष्णु सक्सेना के मधुर प्रेम गीतों ने श्रोताओं के कानों में मिश्री घोल दी। उनकी प्रसिद्ध कविता 'रेत पर नाम लिखने से क्या फायदा, एक आई लहर कुछ बचेगा नहीं। तुमने पत्थर का दिल हमको कह तो दिया, पत्थरों पर लिखोगे मिटेगा नहीं'.... पर श्रोता गीतकार के साथ एकाकार हो गये। उनके गीतों पर कई बार 'वंस मोर-वंस मोर' के मांग उठी। उन्होंने जमीन जल रही है फिर भी चल रहा हूं मैं, खिजां का वक्त है और फूल फल रहा हूं मैं, हर

रश्मि किरण का सम्मान करतीं शुभा हिंगड़, रश्मि पगारिया तथा रंजना भानावत

तरफ आंधियां हैं नफरतों की मैं फिर भी, दिया हूं प्यार का हिम्मत से जल रहा हूं मैं। तू जो ख्वाबों में भी आ जाय तो मेला कर दे, गम के मरुथल में भी बरसात का रेला कर दे, याद वो है ही नहीं आये जो तन्हाई में, तेरी याद आये तो मेले में अकेला कर दे... प्रस्तुत की।

जबलपुर से आई श्रृंगाररस की कवयित्री रश्मि किरण ने अपना मन और वचन दे दिया आपको, फिर भी रहता है मुझसे गिला आपको, आपको देखकर दिल से निकली दुआ, बदनजर से बचाये खुदा आपको... कविता प्रस्तुत की तो श्रोताओं ने तालियों की गर्जना से वातावरण गूंजायमान कर दिया।

हास्य कवि रासबिहारी गौड़ ने हम सलाहें देते हैं, सजने, संवरने, सजाने की, कोई सलाह नहीं देता, आदमी को आदमी बनाने की, गंगाजल से बड़ी मिनरल वाटर की हस्ती है, पानी मंहगा प्यास सस्ती है.... हास्य व व्यंग्य कविता प्रस्तुत कर लोगो की दाद लूटी। लाफ्टर फेम ऐकेश पार्थ ने मुफ्त में हम तुम्हें क्या बतायें, किस कदर चोट खाये हुए हैं, वोट ने हमको मारा है और हम लीडरों के सताये हुए हैं.... कविता से वर्तमान राजनीति पर कटाक्ष किया।

प्रसिद्ध कवि श्रेणीदान चारण ने सीमा पे जातोड़ो मिल्यो मायड़ सूं जवान, रण जाय रह्यो थारो लाड़लो सुजान, बेरी आज पाछो सीमा चढ़ आयो है, आज वीने पाछो कोई उकसायो है, बेरियां रो भरम मिटावणो पड़े, किण री ताकत है जो हिन्द सूं लड़े।

कवि सम्मेलन सफल आयोजन पर मुनव्वर राणा ने अल्पेश लोढ़ा एवं डॉ. तुक्तक भानावत का सम्मान किया। प्रारंभ में अल्पेश लोढ़ा ने अतिथियों का स्वागत किया। कवि सम्मेलन का सफल संयोजन डॉ तुक्तक भानावत ने किया।

प्रारम्भ में मुख्य अतिथि एचआरएच ग्रुप के लक्ष्यराजसिंह मेवाड़, महावीर युवा मंच के मुख्य संरक्षक प्रमोद सामर तथा अर्थ डायग्नोस्टिक्स के अरविन्दर सिंह ने मां सरस्वती के चित्र पर दीप प्रज्ज्वलित किया।

कवि सम्मेलन के सफल आयोजन

रश्मि किरण

में जे. के. लक्ष्मी सीमेंट लि. के शफी शौकत, पैनासोनिक ब्राण्ड सोप के अमित वर्मा, इन्टीग्रीटी मोटर्स के चन्द्रेश

श्रेणीदान चारण

शर्मा, अरेना एनीमेशन के प्रदीप चित्तौड़ा, रोटरी मेवाड़ के संदीप

प्रमोद सामर

सिंघटवाड़िया एवं मनीष गन्ना, उदयपुर चैम्बर ऑफ कॉमर्स के हंसराज चौधरी, एमवाईएम अध्यक्ष मुकेश हिंगड़, सचिव नेमी जैन की विशेष भागीदारी रही।

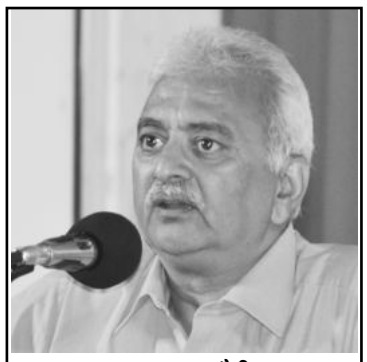
प्रकाश नागौरी

जेतावाड़ा ग्राम पंचायत खुले में शौच मुक्त घोषित

उदयपुर। ग्राम पंचायत जेतावाड़ा को वेल्स फॉर इण्डिया (यू.के.), महान सेवा संस्थान, कोल्यारी एवं पंचायत समिति फलासिया के संयुक्त तत्वावधान में खुले में शौच मुक्त घोषित किया।

समारोह के मुख्य अतिथि झाड़ोल तहसील के उपखण्ड अधिकारी त्रिलोकचन्द मीणा थे। विशिष्ट अतिथि पं.स. फलासिया के विकास अधिकारी रामनिवास बावेल, महान सेवा संस्थान कोल्यारी के सचिव ललितप्रकाश जोशी, फलासिया मण्डल अध्यक्ष रतनलाल गुर्जर, झाड़ोल मण्डल अध्यक्ष संजय मेहता, जिला परिषद सदस्य भेरूलाल वडेरा, पं.स. सदस्य भोपालसिंह शक्तावत तथा प्रधान श्रीमती सदनदेवी थे। उपखण्ड अधिकारी ने नवीन क्रान्ति

में बुजुर्गों ने जिस तरह मोबाईल को अपनाया है, उसी तरह शौचालय को भी अपनाने की अपील की। ललितप्रकाश जोशी ने बताया कि संस्थान सम्पूर्ण फलासिया पंचायत समिति कि 28 ग्राम पंचायतों में शौचालय बनवाने हेतु जागरूकता लाने तथा उसके उपयोग को सुनिश्चित करने का कार्य कर रही है। दिव्यांग व वृद्धजनों के लिए वेल्स फॉर इण्डिया (यू.के.) व महान सेवा संस्थान ने 15 शौचालयों में उपयुक्त रास्ते व हाथ पकड़ने के लिए सहायक डण्डे का निर्माण करवाया है। कार्यक्रम में उपखण्ड अधिकारी ने उत्कृष्ट सहयोग करने वाले कार्यकर्ताओं, अध्यापकों, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं, प्रेरकों को प्रशंसा पत्र एवं मोमेन्टो प्रदान किये। कार्यक्रम का संचालन रमेशचन्द शर्मा एवं चुन्नीलाल कुम्हार द्वारा किया गया। ग्राम पंचायत जेतावाड़ा की सरपंच श्रीमती भानूदेवी गरासिया ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में गोपाललाल लौहार, गुमान सिंह, प्रवीण पारगी, विनोद कलाल, प्रताप सिंह का विशेष सहयोग रहा।

जिंक को 'आईपीपीएआई पॉवर अवार्ड'

उदयपुर। हिन्दुस्तान जिंक की दरीबा स्मेल्टर कॉम्पलेक्स को वर्ष 2016 में पॉवर क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ नवाचार के लिए 'आईपीपीएआई पॉवर 2016' से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार भारत सरकार के न्यू एण्ड रिन्यूवबल एनर्जी मंत्रालय के पूर्व सचिव सुब्रमण्यन ने गोवा में आयोजित एक समारोह में महाप्रबंधक ए.के. सिंह, प्रबंधक इंजीनियर एम. एस. राठौड़, इंजीनियर अरिन्दम घोष को प्रदान किया। यह जानकारी जिंक के हेड-कार्पोरेट कम्यूनिकेशन पवन कौशिक ने दी।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, टाईटल रजि. RAJHIN17670, Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।